मार्च-२०२० ◆ वर्ष ८ ◆ अंक १० ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक
मार्च-२०२०

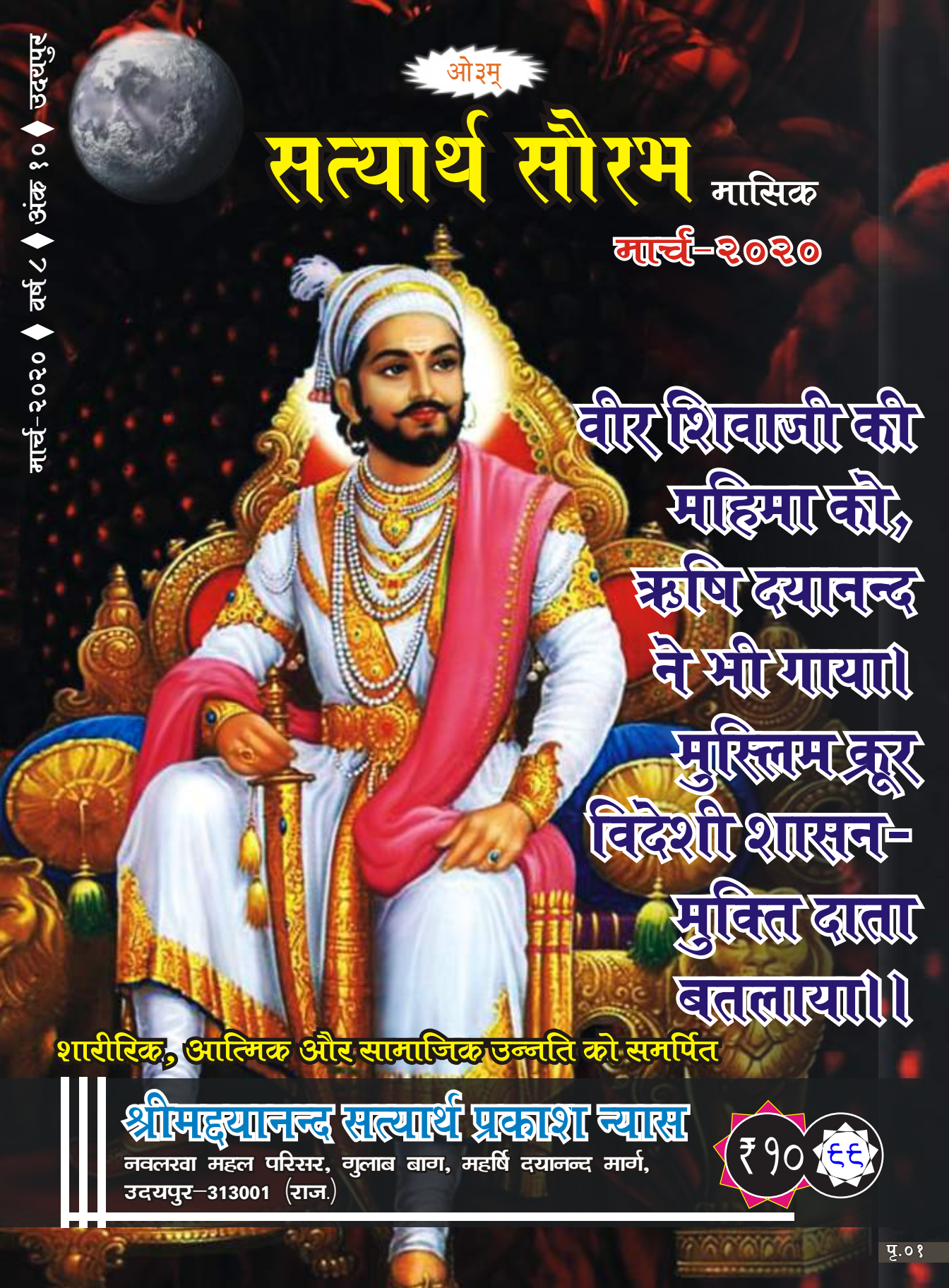

वीर शिवाजी की महिमा को, ऋषि दयानन्द ने भी गाया। मुस्लिम क्रूर विदेशी शासन-मुक्ति दाता बतलाया।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ९९

शुद्धता, गुणवत्ता, उत्तमता के प्रतीक

MDH

मसाले

सेहत के रखवाले

असली मसाले सच-सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08

E-mail : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

ESTD.1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३१२०
फाल्गुन शुदि द्वादशी
विक्रम संवत्
२०७६
दयानन्दाब्द
१९६

March - 2020

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

समाचार २८

०४	वेद सुधा
०५	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०३/२०
२०	भारतरत्न लाल बहादुर शास्त्री
२३	ऋषि के वेदभाष्य

हलचल २१

२६	HUNTING FOR HUNDRED
२७	स्वास्थ्य क्या है?
३०	तर्क की कसौटी पर अवतारवाद

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

स्वामी — श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ८ अंक - १०

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.), ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

क्षमा की सीमा

गतांक से आगे .....

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।। - अथर्व० ३/३०/१

संसार में दो मार्ग हैं- एक सामान्य मार्ग, दूसरा विशेष मार्ग। सामान्य मार्ग तो यही है कि जैसे को तैसा। विशेष मार्ग यह है कि बुरे व्यवहार का उत्तर अच्छे व्यवहार से दिया जाए। सामान्य व्यक्ति तो सामान्य मार्ग अपनाते हैं, परन्तु विशेष व्यक्ति विशेष मार्ग का सहारा लेते हैं। विशेष मार्ग तो यह है कि-

जो तो को काँटा बुवै, ताहि बोय तू फूल।
तोहि फूल का फूल है, वा को है तिरशूल।।

अर्थात् जो तेरे लिए काँटा बोता है तू उसके लिए फूल बो, क्योंकि वह तेरा बोया हुआ फूल तेरे लिए तो फूल बनकर उगेगा और तेरे शत्रु के लिए त्रिशूल बनकर उगेगा।

महाभारतकार ने विशेष मार्ग की पुष्टि करते हुए कहा है-

अक्रोधेन जयेत क्रोधम् साधुं साधुना जयेत्।
जयेत्कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम्।।

मनुष्य को चाहिए कि क्रोध को शान्ति से जीते, बुराई को अच्छाई से जीते, कंजूसी को दानशीलता से जीते और झूठ को सत्य से जीते। यदि हमने क्रोध को क्रोध से जीतना है और बुराई को बुराई से जीतना है, कंजूसी को कंजूसी से जीतना है और झूठ को झूठ से जीतना है तो हममें कोई विशेषता नहीं है।

सामान्य मार्ग की पुष्टि करते हुए फारसी के कवि ने कहा है-

बा बदाँ बद बाशो बा नेकाँ निको।
जाए गुल गुल बाशो जाए खार खार।।

तू बुरों के साथ बुरा हो जा और नेकों के साथ नेक हो जा। तू फूल की जगह फूल हो जा और काँटे की जगह काँटा हो जा।

कुछ उग्र व्यक्तियों ने कबीर के दोहे को इस प्रकार बदल दिया है। इस बदले हुए दोहे में प्रतिकार की भावना प्रबल दिखाई देती है-

जो तो को काँटा बुवै, ताहि बोय तू भाला।
वह मतवाला क्या याद करेगा, पड़ा किसी से पाला।।

अर्थात् जो तेरे लिए काँटा बोता है तू उसके लिए भाला बो दे। वह मतवाला क्या याद करेगा कि किसी के साथ पाला पड़ा है।

परन्तु एक बात यहाँ विशेषरूप से ध्यान में रखने योग्य है। किसी के बुरे व्यवहार का उत्तर अच्छे व्यवहार से देने का सम्बन्ध केवल व्यक्तिगत व्यवहार से है। इसका सम्बन्ध राष्ट्रीय, जातिगत, समाजगत और संस्थागत धर्म से नहीं। जहाँ तक राष्ट्रीय धर्म का सम्बन्ध है यदि शत्रु देश हमारे देश पर हमला कर दे तो उस समय उनके काँटे की जगह फूल न बोकर भाला ही बोना पड़ेगा। यदि उनके काँटे की जगह भाला न बोया गया तो देश परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ा जाएगा। देश की दासता के लम्बे समय में जो दुर्गति हुई, वही अब होगी। दासता का दुष्प्रभाव जाति के गौरव और सम्मान पर पड़ता है। मातृशक्ति की मान-मर्यादा नष्ट होती है। संस्कृति, सभ्यता और भाषा का ह्रास होता है। राष्ट्रीय सम्पत्ति का शोषण होता है। दासता का लम्बा इतिहास इन सब बातों का साक्षी है, अतः राष्ट्रगत धर्म में काँटे की जगह फूल बोना व्यावहारिक नहीं है।

जहाँ तक सामाजिक व्यवस्था का सम्बन्ध है, समाज में अवांछनीय तत्वों को अवश्य दण्ड देना पड़ेगा। यदि ऐसे तत्वों को दण्ड न दिया गया तो समाज की व्यवस्था बिगड़ जाएगी, अतः चोरों, डाकुओं, व्यभिचारियों और अत्याचारियों को तो दण्डित करना ही पड़ेगा, अन्यथा क्षमाशीलता सामाजिक अव्यवस्था उत्पन्न करेगी। इसके लिए मनु महाराज ने कठोर दण्ड-व्यवस्था का विधान किया है-

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्म विदुर्बुधाः।। - मनु० ७/१८

अर्थात् दण्ड प्रजा का शासनकर्त्ता, सब प्रजाओं का रक्षक, सोते हुए प्रजाजनों में जागता है, इसलिए बुद्धिजीवी लोग दण्ड ही को धर्म कहते हैं।

यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरति पापहा।
प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति नेता चेत्साधु पश्यति।। - मनु० ७/२५

जहाँ काले रंगवाला, रक्त-नेत्र और पापों को नष्ट करने वाला दण्ड विचरता है, वहाँ प्रजा मोह को प्राप्त न होकर आनन्दित होती है, यदि दण्ड का चलानेवाला पक्षपातरहित हो।

अतः दण्ड-विधान ही समाज को व्यवस्थित रखता है। इस दण्ड व्यवस्था के अनुसार अपराधियों को दण्ड देना उचित है। अपराधियों के काँटे की जगह फूल बोना समाज के लिए अत्यन्त हानिकर सिद्ध होगा।

जहाँ तक संस्थागत धर्म की बात है, त्रुटि करनेवालों को दण्ड दिया जाएगा, क्योंकि इसके बिना संस्था की व्यवस्था नहीं चल सकती। दण्ड देते समय प्रबन्धक को सुधारवादी दृष्टिकोण अपने सम्मुख रखना चाहिए, प्रतिकारी नहीं बनना चाहिए। प्रतिकार की भावना मनुष्य के पतन का बहुत बड़ा कारण होती है, परन्तु सत्तारूढ़ होकर प्रतिकार की भावना से बचना केवल संस्कारी जीवों का ही काम है। सत्ता के मद में आकर अधिकारी प्रायः मानसिक सन्तुलन खोकर प्रतिकारी बन जाते हैं और व्यक्ति का सुधार न करके उससे बदला लेते हैं। यह अधिकारी वर्ग के पतन का लक्षण है।

क्षमा का सम्बन्ध केवल व्यक्तिगत और विशुद्ध व्यक्तिगत व्यवहार से है। इसका सम्बन्ध राष्ट्रीय, सामाजिक और संस्थागत व्यवहार से नहीं है, यह ऊपर के विवेचन से स्पष्ट कर दिया गया है। **क्रमशः ....**

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के पुरस्कार घोषित

श्री विनोद प्रकाश गुप्त, सैनिक विहार (दिल्ली) को 'सत्यार्थ भूषण' उपाधि

जैसा कि विदित है कि न्यास द्वारा सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के प्रत्येक अंक में सत्यार्थ प्रकाश पर आधारित एक पहेली प्रस्तुत की जाती है। गत १२ अंक के सभी परिणाम प्राप्त होने पर घोषित नीति के अनुसार, सही हल प्रस्तुत करने वाले प्रतिभागियों के चारों समूहों के सही हल भेजने वालों के नामों में से विजेता के चयन के लिए आज न्यास कार्यालय में कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य एवं अन्य स्थानीय न्यासियों की उपस्थिति में न्यास के कार्यालय मंत्री श्री भँवर लाल गर्ग के हाथों लॉटरी निकलवायी गयी। तदनुसार निम्न प्रतिभागियों को विजेता घोषित किया गया-

प्रथम-	श्री विनोद प्रकाश गुप्त; सैनिक विहार (दिल्ली)	(पुरस्कार राशि- 5100 तथा 'सत्यार्थ भूषण' उपाधि एवं प्रमाण पत्र)
द्वितीय-	श्री अन्नत लाल उज्जैनिया; टी.टी. नगर भोपाल (म. प्र.)	(पुरस्कार राशि- 1100 तथा प्रमाणपत्र)
तृतीय-	श्रीमती सुप्रिया चावला; जालन्धर (पंजाब)	(पुरस्कार राशि- 700 तथा प्रमाण पत्र)
चतुर्थ-	श्री राम प्रसाद श्रीवास्तव; लखनऊ (उ. प्र.)	(पुरस्कार राशि- 500 तथा प्रमाण पत्र)

ध्यातव्य है कि यह योजना 'आर्यरत्न डॉ. ओम प्रकाश (म्यामार)' की स्मृति में न्यास के संरक्षक डॉ. सुखदेव चन्द सोनी जी द्वारा प्रायोजित है। योजना आगामी वर्ष में भी जारी रहेगी तथा इसी प्रकार पुरस्कार दिए जावेंगे। अधिक से अधिक पाठक इसमें भाग लेते रहें ऐसा अनुरोध है।

नोट- जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश पहेली में भाग लेकर १२ सही उत्तर भेजे हैं और विजेता न बन पाये हैं उन्हें प्रमाण-पत्र प्रदान किया जावेगा। - सुरेश चन्द्र पाटोदी, व्यवस्थापक

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०३/२०

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (नवम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१		२	व २			३	री ३	३	
४ जी	४		५	र ५	५	तमा ५			६
	७ मु	७	ज ७	७			८	म ८	

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. षट्क सम्पत्ति के अन्तर्गत कितने प्रकार के कर्म करना अभिप्रेत है?
२. मृत्यु होने पर क्या निकल जाता है?
३. जीव का चौथा शरीर क्या कहलाता है?
४. कर्त्ता-भोक्ता शरीर है या जीव?
५. अच्छे कर्मों को करने में भीतर से आनन्द, उत्साह आदि और बुरे कर्मों में लज्जा आदि उत्पन्न होती है, वह किसकी शिक्षा है?
६. क्या परमात्मा पवित्र है?
७. जो परमात्मा के शिक्षा के अनुकूल वर्तता है वह किन सुखों को प्राप्त करता है?
८. अपने आत्मा और अन्तःकरण को अधर्माचरण से हटाकर धर्माचरण में सदा प्रवृत्त रखना क्या कहाता है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०१/२० का सही उत्तर

१. मुक्ति २. परान्तकाल ३. न्याय ४. उच्छेद
५. नहीं ६. अधर्म ७. धर्म ८. धर्माचरण ९. पाँच

''विस्तृत नियम पृष्ठ १० पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अप्रैल २०२०

आत्म निवेदन

माइंड लिंचिंग

ये उत्थान है या पतन हो रहा है

गतांक से आगे .....

किसी समय में भारतीयों की सरलता और सच्चाई की उतनी प्रशंसा प्राप्त होती है जितनी आज आलोचना। स्वामी दयानन्द अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में राजधर्म के वर्णन के अन्तर्गत अमात्यों, गुप्तचरों तथा न्यायविदों आदि की सत्यप्रियता की बात करते हैं तो कई लोग इसे मात्र आदर्श बताते हैं जो कि एक काल्पनिक लक्ष्य है परन्तु स्वामीजी का कहना है कि हमारा भारत ऐसा ही सच्चरित्र था। जो लोग सिर्फ पाश्चात्यों के कथन पर ही विश्वास करते हैं उनके लिए एक उद्धरण यहाँ दे रहे हैं-

ईसा की दूसरी शताब्दी में एरियन नामक लेखक ने राजकीय गुप्तचरों के बारे में लिखा है- 'अब तक एक बार भी ऐसा नहीं हुआ कि इन गुप्तचरों ने कभी गलत सूचना दी हो। वास्तविकता यह है कि भारतीयों पर झूठ बोलने का अपराध लगाया ही नहीं जा सकता।'

आखिर ऐसा क्या हुआ कि सब कुछ बदल गया। इसका एक ही उत्तर है 'माइंड लिंचिंग'। हमारे गौरवशाली अतीत से हमारा सम्बन्ध साशय काटकर प्रेरणा प्राप्त करने का रास्ता ही बन्द कर दिया गया। हम प्रमाण दे रहे हैं- भाई परमानन्द का नाम विश्वविख्यात है। ब्रिटिश राज्य में उन्हें क्या-क्या न सहना पड़ा। जब वे इंग्लैण्ड में थे उन्होंने ब्रिटिश संग्रहालय के पुस्तकालय में ब्रिटिश सरकार की शिक्षा सम्बन्धी नीति के बारे में जब गोपनीय सरकारी दस्तावेजों का अध्ययन किया तो उन्होंने लिखा- 'मेरे इतिहास सम्बन्धी अध्ययन ने मेरे विचारों में क्रान्ति उत्पन्न कर दी। मुझे इस बात का विश्वास हो गया कि भारत में अंग्रेजी की शिक्षा हमारे राष्ट्र को राष्ट्रीयता से गिराने के लिए बनायी गयी है। विलियम बेंटिक द्वारा नियुक्त शिक्षा समिति के सदस्यों के तर्क पढ़कर मैं इस परिणाम तक पहुँचा हूँ कि विजेता जातियाँ विजित देशों में अपनी भाषा तथा साहित्य के प्रचार के द्वारा विजित जातियों की राष्ट्रीयता नष्ट करके उन्हें अपने साथ बाँधना चाहती हैं।

भारतीय वाङ्मय के गम्भीर अध्येता स्टीफन नेप ने मैकाले प्रणीत शिक्षा पद्धति पर टिप्पणी करते हुए लिखा है-

This form of education indoctrinates the children to doubt their own culture, and disrespect their own history and traditions. As a result of this form of education, the Hindu population is slowly forgetting the unique history and lofty culture of their homeland. क्या आज सचमुच ऐसा ही नहीं हो रहा है?

आगे बढ़ने से पूर्व थामस मुनरो, जो ईस्ट इण्डिया कम्पनी में एक अधिकारी थे तथा राजनेता थे उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर क्या लिखा है उसे उद्धृत करना चाहेंगे-

'यदि यूरोप और भारत के बीच सभ्यता का व्यापारिक रूप से आयात निर्यात होना सम्भव हो तो मुझे विश्वास है कि भारत से यूरोप को बहुत कुछ आयात करना होगा यही दशा हमारे देश इंग्लैण्ड की भी होगी।

भारतीय सभ्यता की इससे बड़ी क्या प्रशंसा होगी। उधर मुम्बई के गवर्नर रहे एल्फिन्स्टन लिखते हैं-

'इस समय भारतीयों में ईमानदारी की काफी कमी आ गई है। परन्तु यह बुराई उन्हीं लोगों तक सीमित है जो हमारी सरकार से

सम्बन्धित हैं।'

अर्थात् वे मानते हैं कि मूलरूप से हिन्दुओं का चरित्र सत्य और ईमानदारी से परिपूर्ण है परन्तु जो लोग हमारे सम्पर्क में आये हैं उनमें कमियाँ आ गयीं हैं। पर हम लोग ऐसी स्पष्ट राय का सम्मान नहीं करते। पाश्चात्य उत्कृष्टता के प्रति गहन सम्मोहन को इंगित कर स्वामी विवेकानन्द लिखते हैं-

'रुढ़िवाद को सत्य की कसौटी पर कसने के स्थान पर सत्य की कसौटी ही यह हो गई कि (इस विषय में) पाश्चात्य क्या कहता है।'

और यही बात हम कहना चाहते हैं कि पाश्चात्य का अन्धानुकरण हमारी दुर्गति का मुख्य कारण है। किसी भी प्रकार का प्रतिबन्ध चाहे वह आपके कल्याणार्थ हो निषिद्ध होना चाहिए, यह मानसिकता कहाँ से आयी है? ऐसी स्वच्छन्दता कि आत्मसंयम और आत्मनियंत्रण की शिक्षा ही महत्वहीन हो गयी। आज कोई सच्चरित्रता की बात करता है तो हम moral policing कहकर उसकी निन्दा करते हैं और सारे बुद्धिजीवी इस आवाज में आवाज मिलाने लगते हैं। ऐसी स्थिति में हमारी दुर्दशा तो होनी ही थी। आज दरिंदगी की हद को छू चुका है यह देश। मोमबत्ती मार्च तो कभी-कभी आँखें खोलते हैं, अन्यथा कोई दिन ऐसा नहीं जाता जब समाचार-पत्रों में दुष्कर्म की कोई सूचना न हो। आज हम त्रस्त तो हैं पर कारण और समाधान अभी ओझल ही हैं।

हैदराबाद की डॉक्टर से बलात्कार करने वाले आरोपियों को पुलिस एन्काउंटर में मार गिराया गया। इस बार अप्रत्याशित रूप से ज्यादा शोर शराबा नहीं मचा बल्कि जनता ने तो उन पुलिस अधिकारियों पर पुष्पवर्षा की जिन्होंने इस कार्य को सम्पादित किया था। संभवतः पहली बार ही राज्य सभा में किसी सांसद ने यह माँग की कि ऐसे जघन्य अपराधियों को जनता के हवाले कर देना चाहिए जनता स्वयं फैसला कर देगी। फास्ट ट्रेक अदालतों में वृद्धि की माँग एक बार फिर जोर पकड़ गयी। ये सब तथ्य इंगित कर रहे हैं कि दरिंदगी की अति हो रही है। जहाँ 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान के अन्तर्गत बेटियों को सशक्त बनाने की बात कही जा रही हो, भ्रूण-लिंग परीक्षण को इसलिए गैरकानूनी बनाया गया हो ताकि बेटियों के भ्रूण को नष्ट करने के बजाय उसे जन्म दिया जाय, वहाँ यह प्रश्न उठाना स्वाभाविक है कि जहाँ दो वर्ष की बच्ची की अस्मिता रौंद उसे मृत्यु के आगोश में डाल दिया जाता हो और इस बर्बरता में निरन्तर वृद्धि हो रही हो क्या वहाँ वास्तव में माता-पिता बेटी को जन्म देना चाहेंगे? इसी कारण हमने कुछ वर्ष पूर्व प्रश्न उठाया था कि 'क्यों आये इस देश में लाडो?' इस प्रश्न का उत्तर न देश का शासक और न देश के समाज शास्त्री आज तक दे पाए हैं, आज उनका सर सिर्फ शर्म से झुका है।

आवश्यकता है इस बात पर गंभीर विचार करने की कि दिन प्रतिदिन दुष्कर्मों, हिंसा तथा क्रूरता की घटनाओं में बढ़ोतरी क्यों होती जा रही है? विचारना होगा कोई व्यक्ति कैसे कर्म करता है? उत्तर है जैसे उसके विचार होते हैं। एक ही परिस्थिति में दो भिन्न व्यक्तियों की क्रिया उनके विचारों के कारण भिन्न हो जाती है। जैसे एक सुनसान स्थान पर किसी पथिक की जेब से रुपये गिर पड़ते हैं। दो व्यक्ति वहाँ से निकलते हैं। एक रुपयों को देख कर भी अपने रास्ते निकल जाता है। उसके मन में लालच का लेश भी उत्पन्न नहीं होता परन्तु दूसरा रुपये पड़े देखकर इधर-उधर देखता है और किसी को समीप न पाकर रुपये उठाकर अपनी जेब में डाल लेता है। दोनों के व्यवहार में यह अन्तर क्यों? एक ने **'परद्रव्येषु लोष्ठवत'** को आत्मसात किया है तो दूसरे को इस सुभाषित के कभी दर्शन भी नहीं हुए। जिस परिवेश में इनका लालन-पालन हुआ उसी के अनुरूप इनके विचार बने हैं। जैसा कुछ हम देखते हैं, जैसा कुछ हम सुनते हैं, वे हमें उस दिशा में धकेलते हैं। अब हम अपने विवेक, स्वभाव, सोच के आधार पर उसे ग्राह्य अथवा त्याज्य मान लेते हैं। परन्तु देखा यह गया है कि धारा की दिशा में प्रत्येक प्रायः बहता ही है, धारा के प्रतिकूल प्रशस्त दिशा में तैरने का साहस तो दयानन्द जैसे विरलों में ही होता है। अंग्रेजों ने जाने से पूर्व 'गौरांग प्रभुता' की एक दिशा हमें दी और हम उसमें आकण्ठ डूब गए, धारा की दिशा में बहने लगे। हमने यह मान लिया कि जो कुछ पाश्चात्य है श्रेष्ठ है। हम और हमारी पीढ़ी अंग्रेजों से भी अधिक अंग्रेज बन गयी। अंग्रेजियत ने धीरे-धीरे हमारे घरों में पैर पसारने शुरू कर दिए। अंग्रेजी ने हमें मानसिक रूप से ऐसा पराभूत किया कि जब हमारा बच्चा कान्वेंट (कान्वेंट ही क्यों आज तो सरकारी विद्यालयों को छोड़ दें तो प्रत्येक विद्यालय कान्वेंट बना हुआ है) से आकर अंग्रेजी में बात करता है तो हमारा सीना ५६ इंच से भी ज्यादा फूल जाता है।

हम अंग्रेजी की श्रेष्ठता के ऐसे गुलाम हुए हैं कि कहीं भी कोई अंग्रेजी में हमसे बात करता है और हमें अंग्रेजी बोलनी नहीं आती तो हम हीन भावना से ग्रसित हो पराभूत होने में देर नहीं लगाते। यही बात पहनावे, रहन-सहन, आचार-विचार पर लागू होती है।

ऐसा तो कहना अनुचित होगा कि अंग्रेजों के पास कुछ भी श्रेष्ठ नहीं था। महर्षि दयानन्द ने स्वयं उनके देश प्रेम, बाल विवाह न करना आदि गुणों की प्रशंसा की है। परन्तु हमने उनका अनुकरण गुणावगुण के आधार पर नहीं किया।

पाश्चात्य जगत् को खुला समाज माना जाता है। खुला का तात्पर्य है बेरोकटोक। वे मद्यपान करते हैं, मांसाहार करते हैं नर-नारी सम्बन्धों में पर्याप्त खुलापन और शिथिलता है। यह 'माइंड लिंचिंग' का परिणाम ही है कि जिसने जितना जल्दी इन अवगुणों को आत्मसात किया वो हमारी नजरों में उच्चवर्गीय सम्भ्रान्त बनता गया। यह तथ्य है कि अनेक युवक धूम्रपान और शराब का सेवन अभिजात्य दिखने हेतु ही प्रारम्भ करते हैं। भारत में इससे पूर्व भी वाम-मार्ग व पंच-मकारों का प्रचलन हुआ यह बात सही है पर जन-सामान्य प्रायः इससे दूर रहा। अतः इनका अंत भी शीघ्र हो गया। परन्तु आज अश्लीलता अंतहीन प्रतीत होती है। फिल्मकारों ने भी शायद हमारी सभ्यता को कुचलने की दुरभिसंधि करली है। ऐसा नहीं है कि पहले की फिल्मों में यौन सम्बन्ध वा रेप होते ही नहीं थे पर वे सांकेतिक रूप में इस प्रकार फिल्माए जाते थे कि दर्शक को नजर नहीं झुकानी पड़ती थी। याद कीजिए सत्यकाम फिल्म में बलात्कार का दृश्य। पर आज 'रियेलिटी' के नाम पर समस्त मर्यादाएँ तोड़ दी गयीं हैं। किसी फिल्म में यदि कोई गंभीर विषय है भी तो उसमें आइटम गीत के नाम पर अश्लीलता परोस दी जाती है। स्थिति यह हो गयी है कि आखिर कब तक पेरेंट्स भी कुछ न देखें। ठीक है वे कुख्यात फिल्मों को तो छोड़ देते हैं पर जो बची फिल्म वे देखते हैं उसमें भी वह सब कुछ है जो अब मजबूरी में सामान्य हो चला है। अर्थात् निषिद्ध को सामजिक स्वीकृति मिल गयी है। घरों में यह सब प्रदूषित संस्कृति धीरे से पैर पसारती जा रही है। आप याद करें। चार अक्षरों का एक शब्द आपको घरों में कभी सुनायी नहीं दिया होगा। यह है 'SHIT' केम्ब्रिज डिक्शनरी में इसके तात्पर्य के बारे में जो लिखा है उसका तात्पर्य 'विष्ठा' से है। फिल्मों तथा टीवी सीरियलों के चरित्रों की जुबान से अब यह हमारे बच्चों की जुबान पर न जाने कब आ गया- 'शिट यार', 'ओ शिट' एक दिन में सैंकड़ों बार सुनायी दे जाएगा। अब एक शब्द ऐसा है जिसे न तो मैं लिखूँगा न उसका अर्थ लिखूँगा पर इतना ही लिखूँगा कि वह 'F' से प्रारम्भ होता है, आशा करूँगा कि आप समझ जायेंगे क्योंकि आजकल फिल्मों और सीरियलों से होता हुआ यह भी आम भारतीय घरों में उतरने का प्रयास कर रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि फिल्मकारों का एक वर्ग हमें वाममार्ग पर धकेलने हेतु विशेष प्रयत्नशील है और हम हैं कि संस्कार और संस्कृति की माला जप रहे हैं पर इस ओर से बेखबर हैं।

स्मरण रखें फिल्में और टेलीविजन अभिव्यक्ति के इतने सशक्त माध्यम हैं कि दर्शक उसमें डूबकर एक प्रकार से उसका हिस्सा बन जाता है। फिल्म कलाकार इसीलिए आज रोल मॉडल बने हुए हैं। बच्चे उन्हीं का अनुकरण करना चाहते हैं। पर क्या वे वास्तव में इस पद के योग्य हैं। समाज की गिरावट का सबसे बड़ा कारण यही है कि हम राम, कृष्ण, दयानन्द, बुद्ध, महावीर, शिवाजी, महाराणा प्रताप को विस्मृत कर उक्त प्रकार के लोगों को रोल मॉडल बना चुके हैं। इसका प्रमाण है सोशल मीडिया पर इनके फोलोअरों की संख्या।

स्मरण रखें जैसा कन्टेंट टेलीविजन पर दिखाया जाता है वह समाज का प्रतिबिम्ब होता है तथा यह भी कि यह कन्टेंट जैसा है वैसा ही समाज बनाने में सहायक होता है। क्या उरी, गाजी और राजी जैसी फिल्मों ने देशप्रेम के जज्बे से सभी को अनुप्राणित नहीं किया था? क्या इस बात से कोई इनकार कर सकता है कि आज की पीढ़ी 'श्री राम' को रामानन्द सागर की नजरों से जानती है न कि बाल्मीकि की, पर आज अधिकांश फिल्में अश्लीलता तथा हिंसा और मिथ्या नवाचारों से भरी पड़ीं हैं। नग्नता तांडव कर रही है। फिर समाज के घटकों के विचार निर्माण को क्या यह प्रशस्त दिशा दे पायेंगे? यह समाज शास्त्रियों के चिन्तन का विषय है।

आज का शिक्षक तथा छात्र दिन-रात टीवी, मोबाइल तथा कम्प्यूटर के माध्यम से ऐसे कार्यक्रमों के सतत् सम्पर्क में है। जबकि शिक्षा मनोविज्ञान के अद्भुत ज्ञाता महर्षि दयानन्द शिक्षकों तथा विद्यार्थियों

के लिए आचार-संहिता स्थापित कर सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं- 'यथार्थ आचरण से पढ़ें और पढावें ,सत्याचार से सत्यविद्याओं को पढ़ें-पढावें, तपस्वी अर्थात् धर्मानुष्ठान करते हुए वेदादि शास्त्रों को पढ़ें-पढावें, बाह्य इन्द्रियों को बुरे आचरण से रोक के पढ़ें और पढ़ाते जायँ, मन की वृत्ति को सब प्रकार के दोषों से हटाके पढ़ते-पढ़ाते जायँ, आहनीय आदि अग्नि और विद्युत् आदि को जानके पढ़ते-पढ़ाते जायँ और अग्निहोत्र करते हुए पठन और पाठन करें-करावें, अतिथियों की सेवा करते हुए पढ़ें और पढावें, मनुष्य सम्बन्धी व्यवहारों को यथायोग्य पढ़ते-पढ़ाते रहें, संतान और राज्य के पालन करते हुए पढ़ते-पढ़ाते जायँ, वीर्य की रक्षा और वृद्धि करते हुए पढ़ते-पढ़ाते जायँ, अपने संतान और शिष्य का पालन करते हुए पढ़ते-पढ़ाते जायँ।'

अहिंसा, सत्याचरण, चोरी-त्याग, ब्रह्मचर्य (उपस्थेन्द्रिय का संयम), लोलुपता का त्याग, आन्तरिक तथा बाह्य पवित्रता, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-भक्ति इस पाठ्यक्रम के अनिवार्य अंग हैं। अब आप स्वयं निश्चय कर लीजिये कि किस मार्ग पर चलकर हिंसक और दुष्कर्मियों से मुक्त समाज का निर्माण हो सकता है। भारतीय मनीषा के सुझाए मार्ग की पूर्ण उपेक्षा प्रयत्न-पूर्वक मैकाले के मानस पुत्रों ने की उसका दुष्परिणाम हमें विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में दिख रहा है।

हिंसा, स्वच्छन्द यौन सम्बन्ध और मादक पदार्थों का सेवन उप-उत्पाद नहीं मुख्य उत्पाद हो गए हैं। कई पत्रिकाओं द्वारा इस सन्दर्भ में किये गए सर्वेक्षण आप पढ़ सकते हैं। १३ अक्टूबर को 'ब्रेस्ट कैंसर अवेयर डे' मनाया जाता है। अच्छी बात है परन्तु इसके लिए 'No Bra Day' को प्रोत्साहित करना कहाँ आवश्यक है? इस बहाने, वे महिलायें जो कपड़े उतारने को ही पुरुषों की बराबरी मानतीं हैं उस सोच को मूर्त रूप देने में लगीं हैं जिसे Radical Feminism भी कहा जाता है। अमेरिका में 'Free the nipples movement' चलाया गया। उनका तर्क है कि जब पुरुष टॉपलेस रह सकते हैं तो महिलाओं पर रोक क्यों? समाचार यह हैं कि अमरीका के ५ राज्यों में इसे मान्यता दे दी गयी है। आप अधिक निश्चिन्त मत रहिये। पाश्चात्य रहन-सहन सर्वश्रेष्ठ है, के अनुक्रम में भारत में यह सब दस्तक दे चुका है, विशेषकर फिल्म इंडस्ट्री और तथाकथित अति उच्च विश्वविद्यालयों के माध्यम से। वहाँ के हॉस्टलों में क्या गुल खिल रहे हैं यह गाहे बगाहे सामने आता रहता है।

दूरदर्शन क्रान्ति से पूर्व भारत में देखने-सुनने के लिए ज्यादा कुछ नहीं था। अतः नाटक, सत्संग, कथा आदि के कार्यक्रम ही विशेष हुआ करते थे। रेडियो अवश्य श्रव्य-साधन था पर उसका प्रभाव सीमित था, पर दूरदर्शन तो मानो सारी दुनिया ही हमारे घरों में ले आया। तिस पर भी भारतीय दूरदर्शन का प्रारम्भ सही दिशा में था। 'हम लोग' और 'बुनियाद' जैसे कार्यक्रम आपको याद होंगे। तब सप्ताह में एक बार फिल्म दिखायी जाती थी। तब हमें स्मरण है १२ चैनल वाला टीवी आता था। हम सोचते थे क्या फायदा चैनल तो एक ही आता है। कीमत कुछ और कम कर देते चैनल एक ही रखते। पर सोचा भी न था कि यह स्थिति आयेगी। आज सैंकड़ों चैनल २४ घंटे चल रहे हैं। पहले भारतीय कार्यक्रम कम से कम ऐसे होते थे कि पूरा परिवार उन्हें एक साथ बैठकर देख सकता था। पर आज आप ऐसा कर सकते हैं? ६० प्रतिशत तो बेहूदा कार्यक्रम ही आते हैं। जिनमें 'आपसी षड्यंत्रों की हद' का भी सामान्यीकरण किया जा रहा है। एक तरफा प्यार और उसकी येन-केन-प्राप्ति भी सामान्य प्रवृत्ति बनायी जा रही है। इस हेतु हर दूसरे सीरियल में महिलायें भी कातिल दिखायी जा रहीं हैं, उनकी ममतामयी छवि धीरे-धीरे गायब हो रही है। शायद यही आज का महिला सशक्तीकरण है। हमारे महापुरुषों विशेषकर श्री राम, कृष्ण, दयानन्द, महावीर, बुद्ध ने क्षमा के अत्यन्त महनीय पक्ष को हमारे समक्ष रखा परन्तु आज के ये सीरियल 'बदला लेने' को महिमा मंडित कर रहे हैं। और इनके चलते आप दिवा-स्वप्न देख रहे हैं कि आदर्श समाज की संरचना हो जायेगी? विडम्बना तो देखिए समाज में गन्द परोसने वाले ऐसे सीरियल व फिल्में बनाने में अग्रणी फिल्म निर्माताओं को 'पद्म पुरस्कार' से नवाजा जा रहा है। एकता कपूर को शायद 'क्या कूल हैं हम' जैसी फिल्में और 'गंदी बात' जैसी बैव सीरिज बनाने के प्रतिफल में 'पद्मश्री' से अलंकृत किया गया है। यह मानसिक दिवालियापन नहीं तो और क्या है? **क्रमशः .....**

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

२७ मार्च

कर्मयोगी, भामाशाह महाशय धर्मपाल जी के 97वे जन्मदिवस के अवसर पर न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यों की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। महाशय जी के निरामय दीर्घायुष्य हेतु हम सभी प्रभु चरणों में नत् हैं।

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

अब मात्र कीमत ₹ 45 में
४००० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

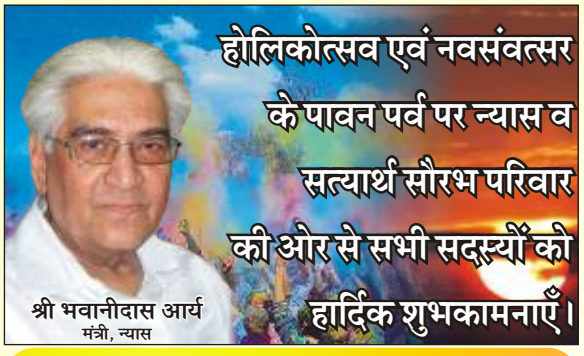

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश

₹100 के स्थान पर अब ₹45 में उपलब्ध

सौ प्रतियाँ लेने पर ₹4000

(डाक खर्च अतिरिक्त)

₹15000 सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग राशि देकर एक हजार प्रतियों पर अपना वा अपने किन्हीं परिचित का विवरण फोटो सहित छपवावें।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य	भंवरलाल गर्ग	डॉ.अमृत लाल तापड़िया
मंत्री-न्यास	कार्यालय मंत्री	उपमंत्री-न्यास

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

''सत्यार्थ-भूषण'' पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें ''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वि-जन्मशताब्दी लेखमाला

३

मूलशंकर जी के पिता पक्के शैव थे। फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी संवत् १८९४ की शिवरात्रि के अवसर पर पिता ने निश्चय किया कि उनका चौदह साल का पुत्र भी व्रत रखे और रात्रि जागकर शिव आराधना करे। जैसे-जैसे रात व्यतीत हुई मंदिर में सब लोग यहाँ तक कि पुजारी तथा करसन जी भी सो गए परन्तु मूलशंकर शिवदर्शन के दृढ़ निश्चय के साथ जागते रहे। जब मूलशंकर ने शिवपिण्डी पर चूहों को उत्पात करते देखा तो शिव के सर्वसामर्थ्य में शंकालु होकर और पिता के द्वारा समाधान न कर पाने पर उन्होंने व्रत तोड़ दिया और सच्चे शिव के दर्शन करने का संकल्प लिया।

जातिव्यवस्था को न समझने अथवा जानबूझकर स्वार्थवश Twisted मंतव्य प्रकट करने के कारण आज देश में वैमनस्य फैला हुआ है। स्वार्थी राजनीतिज्ञों ने अपने वोट के लिए इस वैमनस्य को बढ़ावा देकर नागरिकों को एक दूसरे के खिलाफ खड़ा कर दिया है। ऐसे में महर्षि दयानन्द के वर्ण व्यवस्था सम्बन्धी विचारों ने इस देश को ऐसी दिशा दिखायी जिससे समरसता स्थापित हो सकती थी और अल्पांश में हुयी भी। इसका दिग्दर्शन हमने गत लेख में किया था। वस्तुतः जाति और वर्ण की गडमड से सारी गड़बड़ हुयी है। आज वर्ण और जाति को समान मान लिया है यह गलत है। जाति ईश्वरप्रदत्त है, यह अपरिवर्तनीय है, न ही किसी जाति को चुनना किसी के अधिकार में है। दूसरे शब्दों में कहें तो जाति का निर्धारण जीव के कर्मानुसार परमात्मा द्वारा किया जाता है। परन्तु वर्ण-चयन मनुष्य के हाथ में है। अतः वर्ण ईश्वर प्रदत्त नहीं हैं तथा विशेष बात यह है कि वर्ण-परिवर्तन भी स्वयं मनुष्य के हाथ में है। इसको इस प्रकार समझ सकते हैं कि- किसी बच्चे को डॉक्टर बनना है, सी.ए. बनना है अथवा इंजीनियर, यह उसकी अपनी रुचि पर निर्भर करता है। लक्ष्य निश्चित करने के पश्चात् तदनुरुप विषय लेकर तैयारी तथा परिश्रम करना भी उसके ही हाथ में है। इस प्रकार किसी को अज्ञान दूर करने में समाज की सेवा करनी है अथवा अन्याय को समाज से समाप्त करने का व्रत लेना है अथवा अभाव को दूर करना है, यह निश्चय करना उसके स्वयं के हाथ में है, हाँ उसके लिए अपेक्षित प्रयास कर योग्यता अर्जित करनी होगी। परन्तु पुरुषार्थ करेगा तो मनवांछित फल मिलेगा ही। पाठ्यक्रम में भी आगे चलकर विशेष विद्याओं का विशेष अध्ययन उसी प्रकार विहित होगा जैसे आजकल जीव विज्ञान अथवा गणित वा कॉमर्स आदि लेते हैं। वे फिर उसी क्षेत्र में विशेषज्ञ बनकर कार्य करते हैं और ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य कहलाते हैं। अत्यन्त ध्यान देने योग्य बात यह है कि जिस प्रकार आज भी हर प्रकार की सुविधाओं व प्रयत्नों के पश्चात् भी कई-कई वर्षों तक परीक्षा देने पर अनेक अभ्यर्थी असफल रहते हैं फिर आजीविका हेतु वे चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी जैसी नौकरी कर लेते हैं जिसमें किसी विशेष योग्यता की आवश्यकता नहीं पड़ती क्योंकि अब कोई अन्य उपाय शेष नहीं रहा। यूँ समझें कि ये चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी ही शूद्र हैं पर जाहिर है ये अस्पृश्य कदापि नहीं हैं, आप उसे फटकार या धिक्कार भी नहीं सकते। सेवा उसका कार्य है। और जब भी वह अपने पुरुषार्थ से योग्यता अर्जित कर लेगा वह भी डॉक्टर या इंजीनियर बन सकता है। यही वर्ण परिवर्तन है, जो केवल योग्यता पर आधारित है। जिस प्रकार चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी का पुत्र डॉक्टर बन सकता है ठीक उसी प्रकार शूद्र का पुत्र निश्चितरूपेण ब्राह्मण बन सकता है।

अतः वैदिक वर्ण व्यवस्था गतिशील है, किसी के साथ अन्याय नहीं करती, सबको समान अवसर प्रदान करती है। इसमें किसी के शोषण का कोई स्थान नहीं है। इसमें कोई छोटा बड़ा भी नहीं है। ये वर्ण एक दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं। सबके अलग-अलग कार्य हैं जो मिलकर राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

महर्षिवर देव दयानन्द की यही महती कृपा है कि उन्होंने 'शूद्र' सम्बन्धी मध्यकालीन सभी अपव्याख्याओं को धूल-धूसरित करते हुए विशुद्ध वैदिक वर्ण व्यवस्था का स्वरूप हमारे सामने रख मानव-मानव के मध्य जन्माधारित ऊँच-नीच के आधार पर पनप रहे वैमनस्य को दूर करने का भरपूर प्रयास किया। उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने तो दलितोद्धार के लिए एक लम्बी लड़ाई लड़ी जिसका संक्षिप्त विवरण अगले लेख में देंगे। स्वामी जी की यह व्याख्या बुद्धिगम्य व्याख्या है।

वर्ण व्यवस्था कब जातिप्रथा में परिवर्तित हो गयी इस विषय में मतभेद है। ऐसा प्रतीत होता है कि अस्पृश्यता का उद्भव चाहे अर्वाचीन हो पर जात्याधारित विभेद व निषेध आचार्य शंकर के समय में भी थे। गौतम धर्मसूत्र में स्पष्टतः शूद्रों का श्रुति-पठन-श्रवण का निषेध है। तुलसी ने भी प्राकृतिक न्याय की धज्जियाँ उड़ाते हुए लिख दिया कि-

पूजिंह विप्र सकल गुण हीना, सूद्र न गुन गन ग्यान प्रवीना।

ऐसे ही समय में **'ब्रह्म वाक्यं जनार्दनं, ब्रह्मद्रोही विनश्यति, ब्राह्मणो न हन्तव्य'** आदि उक्तियों का सृजन हुआ।

आधुनिक शोध बताते हैं कि शूद्र की नीचता तथा अस्पृश्यता का उद्भव मुगल और उससे भी अधिक अंग्रेजों के समय में हुआ।

'विद्वानों ने मध्यकालीन भारत के दस्तावेजों और शिलालेखों में वर्ण और जाति के अस्तित्व और प्रकृति के ऐतिहासिक प्रमाणों को खोजने की कोशिश की है। मध्ययुगीन भारत में वर्ण और जाति प्रणालियों के अस्तित्व के लिए सहायक सबूत दुर्लभ हैं, और विरोधाभासी साक्ष्य पाए जाते हैं।

ईटन के मुताबिक साक्ष्य दिखाता है कि शूद्र 'कुलीन' वर्ग का हिस्सा थे, और कई पिता और पुत्रों के अलग-अलग व्यवसाय थे। इससे पता चलता है कि ११ वीं और १४ वीं शताब्दी के बीच दक्कन क्षेत्र में हिन्दू काकतीय जनसंख्या में 'सामाजिक स्थिति' अर्जित की जाती थी, विरासत में नहीं मिलती थी।

भारत के तमिलनाडु क्षेत्र का अध्ययन, प्रोफेसर लेस्ली ओरर द्वारा किया गया। वह कहते हैं कि 'चोल अवधि के शिलालेख (दक्षिण भारतीय) समाज की संरचना के बारे में हमारे सामान्य विचारों को चुनौती देते हैं। ब्राह्मणिक ग्रन्थों की अवधारणा से उलट समाज में जाति व्यवस्था के स्पष्ट सबूत नहीं मिलते हैं। विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच जाति आधारित सीमाओं के स्पष्ट सबूत नहीं मिलते हैं।'

उत्तरी भारतीय क्षेत्र के लिए, सुसान बेली लिखते हैं-

'औपनिवेशिक काल तक, उपमहाद्वीप में से अधिकांश लोगों के लिए जाति के औपचारिक भेद केवल सीमित महत्व के थे।

मानविकी के प्रोफेसर डिर्क कोल्फ के अनुसार उत्तर भारत में जाति व्यवस्था एक अपेक्षाकृत नई घटना है जो क्रमशः मुगल और ब्रिटिश काल की शुरुआत में प्रभावी हो गई।

अंग्रेजों ने अपने स्वार्थ के लिए जातियों के सन्दर्भ में अतर्कपूर्ण हस्तक्षेप किया उसे लेकर स्वीटमैन ने कहा कि जाति की यूरोपीय धारणा ने पूर्व राजनीतिक विन्यास को खारिज कर दिया और भारत के 'जाति के अनिवार्य रूप से धार्मिक चरित्र' पर जोर दिया। औपनिवेशिक काल के दौरान, जाति को धार्मिक व्यवस्था के रूप में परिभाषित किया गया था। हालांकि यह मूल रूप से एक सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था थी। इससे औपनिवेशिक शासकों के लिए भारत को आध्यात्मिक सद्भाव से रहित समाज के रूप में चित्रित करना संभव हो गया, जिसकी आलोचना उन्होंने 'निराशाजनक महामारी' के रूप में की, इसने औपनिवेशिक शक्तियों को अधिक 'उन्नत राष्ट्र' के रूप में चित्रित किया जो आवश्यक उदार, पितृत्ववादी राजनीतिक प्रशासन प्रदान करता था।

जो भी हो जातिप्रथा का आधुनिक चेहरा अत्यधिक भयावह था और अनेक उपचारों के बाद भी आज भी हैरान करता है, जब

हम श्मशान गृह में भी अलग-अलग जातियों के लिए दाह-वेदियाँ अलग-अलग बनी देखते हैं। हमारे उदयपुर के अशोक नगर श्मशान गृह में यह स्थिति है। इस अलगाव को जिसने राष्ट्र को तबाह कर दिया है हम मृत्यु तक भी गले लगाए हुए हैं यह चिन्त्य ही है।

एक विद्वान् द्वारा वर्णित जाति-प्रथाजन्य सामाजिक विकृतियों का चित्रण निम्न पैरा में देखें- भारतीय जातिव्यवस्था में कुछ जातियाँ उच्च, पवित्र, शुद्ध और सुविधा प्राप्त थीं और कुछ निकृष्ट, अशुद्ध, अस्पृश्य और असुविधा प्राप्त। क्षत्रिय पूज्य एवं ब्राह्मण पवित्र थे और उन्हें अनेक धार्मिक, सामाजिक तथा नागरिक विशेषाधिकार प्राप्त थे। इनके विपरीत अस्पृश्य जातियाँ हैं। धार्मिक दृष्टि से ये जातियाँ शास्त्रों के पठनपाठन तथा श्रवण के अधिकार से वंचित हैं। इनका उपनयन संस्कार नहीं होता। इनके धार्मिक कृत्यों में पुरोहित पौरोहित्य नहीं करता। देवालयों में इनका प्रवेश निषिद्ध है। ये अशुद्ध और अशुद्धिकारक थे। आर्थिक और व्यावसायिक क्षेत्र में गंदे और निकृष्ट समझे जानेवाले कार्य इनके सुपुर्द हैं जिनसे आय प्रायः अत्यल्प होती है। इनकी बस्तियाँ गाँव से कुछ हटकर होती थीं। ये अनेक सामाजिक और नागरिक अनर्हताओं के भागीदार थे। नाई और धोबी की शारीरिक सेवाएँ इन्हें उपलब्ध नहीं थीं। ये सार्वजनिक तालाबों, धर्मशालाओं और शिक्षण संस्थाओं का उपयोग नहीं कर सकते। अन्त्यजों की दशा उत्तर की अपेक्षा दक्षिण भारत में अधिक हीन थी।

१८वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक महाराष्ट्र में महार जाति के लोगों को दिन में दस बजे के बाद और ४ बजे के पहले ही गाँव

और नगर में घुसने की आज्ञा थी। उस समय भी उन्हें गले में हाँडी और पीछे झाड़ू बाँधकर चलना होता था। दक्षिण भारत में पूर्वी और पश्चिमी घाट के शाणान और इड़वा कुछ काल पूर्व तक दुतल्ला मकान नहीं बनवा सकते थे। वे जूता, छाता और सोने के आभूषणों का उपयोग नहीं कर सकते थे।

१९वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक तियाँ और अन्य अछूत जाति की नारियाँ शरीर का ऊर्ध्व भाग ढककर नहीं चल सकती थीं। नाई, कुम्हार, तेली जैसी जातियाँ भी वैदिक संस्कारों और शास्त्रीय ज्ञान के अधिकार से वंचित रहीं। इसके विपरीत क्षत्रियों एवं ब्राह्मणों को अनेक विशेषाधिकार प्राप्त थे।

छुआछूत का दायरा बहुत व्यापक था। अछूत जातियाँ भी एक दूसरे से छूत मानती हैं। मालाबार में पुलियन जाति के किसी व्यक्ति को यदि कोई परहिया छू ले तो पुलियन पाँच बार स्नान करके और अपनी एक अँगुली के रक्त निकाल देने के बाद शुद्धि लाभ करता है। श्री ई. थर्स्टन के अनुसार यदि नायादि जाति का व्यक्ति एक सौ हाथ की दूरी पर आ जाए तो सभी अपवित्र हो जाते हैं।

इसी अमानवीयता के कारण डॉ. अम्बेडकर ने कहा था 'जब तक जाति रूपी राक्षस को मारा नहीं जाएगा तब तक न तो राजनीतिक सुधार हो पायेगा और न आर्थिक सुधार।'

सजातीय विवाह जन्मगत जातिप्रथा को मजबूत करने का प्रमुख साधन बनी। सजातीय विवाह जातिप्रथा की रीढ़ माना जाता है। समस्या की जड़ को समझते हुए उसी पर प्रहार करते हुए आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने विवाह में तथाकथित जाति को आधार रूप में पूर्णतः तिरस्कृत कर दिया। वे विवाह के आधारों में केवल गुण-कर्म-स्वभाव को ही महत्वपूर्ण मानते हैं। वर-वधू के गुण-कर्म-स्वभाव एक जैसे होने चाहिए, चाहे वे किसी भी कुल में जन्म लें। प्राचीन भारत में यह स्थिति नहीं थी। भारतीय मनीषा का मानना है-

जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् भवेत् द्विजः।
वेद-पाठात् भवेत् विप्रः ब्रह्म जानातीति ब्राह्मणः॥

जन्म से (प्रत्येक) मनुष्य शूद्र, संस्कार से द्विज, वेद के पठन-पाठन से विप्र (विद्वान्) और जो ब्रह्म को जानता है वो ब्राह्मण कहलाता है।

गीता में भी कहा है-

'ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः॥ - भगवद्गीता १८/४१

हे परंतप! ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों के तथा शूद्रों के कर्म स्वभाव से उत्पन्न गुणों द्वारा (जन्म से नहीं) विभक्त किए गए हैं।

निष्कर्षतः हम कहना चाहेंगे कि यह तथ्य है कि वर्णव्यवस्था प्राकृतिक न्याय पर आधारित समाज में समता स्थापित करने वाली योग्यता व कर्माधारित गतिशील व परिवर्तनीय व्यवस्था है जब कि जाति व्यवस्था भारत के सर्वांगीण पतन की अवस्था में पनपी तथाकथित उच्च वर्णीय मतान्धों के अहंकार से उपजी गर्हित अव्यवस्था है जो सर्वांश में त्याज्य है। दयानन्द के पूर्व भी बुद्ध, महावीर आदि महापुरुषों ने जातिगत वैषम्य को दूर करने के भरपूर प्रयास किये, परन्तु सीमा यह रही कि वे इस अन्याय मूलक व्यवस्था जो कि वेद के आधार पर मनघडंत रूप से गढ़ी गयी थी, का पर्दाफाश नहीं कर पाए, पोल नहीं खोल पाए, क्योंकि वे वेदों के विद्वान् नहीं थे। परन्तु स्वामी दयानन्द वेदों के प्रामाणिक विद्वान् थे इसलिये उन्होंने जोर देकर कहा कि वेदों में ऐसी कोई व्यवस्था है ही नहीं। बल्कि उन्होंने वेदों के उद्धरण से सिद्ध किया कि जाति प्रथान्तर्गत शूद्रों के वेद पढ़ने का जो निषेध किया है वह वेद की आज्ञा के विरुद्ध है।

क्योंकि मनमानी व्यवस्थाओं को वेदाज्ञा कहकर समाज को अमानवीय व्यवहार सहने के लिए मजबूर किया गया अतः स्वामी दयानन्द जी ने भी प्राकृतिक न्याय के अतिरिक्त वेदों का सहाय लेने का उपक्रम किया क्योंकि **'वेदोऽखिलो धर्मस्य मूलं'** तथा परमात्मा की वाणी होने से परम और स्वतः प्रमाण भी। वेद का निम्न मन्त्र और उसकी ऋषिकृत व्याख्या सुधी पाठक देखने का श्रम करें-

रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु रुचꣳराजसु नस्कृधि।
रुचं विश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम्॥ - यजुर्वेद १८/४८

महर्षि इसका अर्थ करते हुए लिखते हैं- 'जैसे परमेश्वर पक्षपात छोड़कर ब्राह्मण आदि वर्णों के प्रति (इसमें शूद्र भी सम्मिलित हैं) समान प्रेम रखता है, वैसे ही विद्वान् भी समान रूप से प्रेम रक्खें। जो ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव से विरुद्ध हैं वे सब नीच और तिरस्कार के योग्य हैं।' क्या इससे स्पष्ट और कोई व्यवस्था हो सकती है? सभी वर्ण समान हैं किसी को नीच नहीं माना जा सकता, कोई तिरस्कार के योग्य नहीं है। यह भी बता दिया कि नीच कौन है तिरस्कार किनका हो? जो भी ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के विरुद्ध कार्य करते हों आचरण करते हों फिर चाहे वे ब्राह्मण हों, क्षत्रिय हों अथवा वैश्य वा शूद्र हों। ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के विरुद्ध का तात्पर्य है जैसे ईश्वर पक्षपात रहित है, न्यायकारी है, दयालु है, विवेकशील है, सबका भला चाहता है उसी प्रकार मनुष्य भी बरतें। जो ऐसा न करे अर्थात् विपरीत आचरण करे वह नीच भी है तथा तिरस्कार के योग्य है। चाहे वह किसी भी कुल में जन्म लेने वाला हो। निम्न आचरण व प्रवृत्ति ही वेद में तिरस्कार के आधार हैं जन्म कुल नहीं यह स्पष्ट है। इसी बात को एक और वेदमंत्र देकर महर्षि ने स्पष्ट किया-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳशूद्रोऽअजायत॥ - यजुर्वेद ३१/११

अर्थात् जो विद्या-शम-दम आदि गुणों में मुख के सामान उत्तम

हैं वे ब्राह्मण, जो अधिक पराक्रम वाले तथा भुजा के सामान कार्य साधक हैं वे क्षत्रिय, जो व्यवहार विद्या में कुशल हैं वे वैश्य और जो सेवा में कुशल विद्यारहित तथा पाँवों के सामान मूर्खता आदि हीन गुणों से युक्त हैं वे शूद्र हैं, ऐसा निश्चित करना और मानना चाहिए।

यह तो है वैदिक व्यवस्था पर स्वार्थी लोगों ने विशेष घरानों में जन्म लेने वालों को नीच व तिरस्करणीय घोषित कर दिया। यह घोर अन्याय तथा अक्षम्य अपराध था। वेद में कहीं भी ऐसी व्यवस्था नहीं है। स्मृतियों में अगर कहीं इस अमानवीयता का समर्थन मिलता है तो वह मान्य नहीं है क्योंकि महर्षि दयानन्द के अनुसार स्मृतियाँ वहीं तक मान्य हैं जहाँ तक वह वेदानुकूल हैं। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि जिन आचार्यों ने परमात्मा के भिन्न-भिन्न अंगों से भिन्न-भिन्न वर्णों की उत्पत्तिपरक अर्थ किये हैं वे अर्थ न होकर अनर्थ हैं। महर्षि लिखते हैं- 'जब परमेश्वर के निराकार होने से मुखादि अंग ही नहीं हैं तो मुख से उत्पन्न होना असंभव है जैसाकि वन्ध्या स्त्री आदि के पुत्र का विवाह होना।'

महात्मा गाँधी भी वैदिक वर्णव्यवस्था में बराबरी के दर्शन भली-भाँति करते हैं, वे लिखते हैं-

I believe in Varnashram of Vedas which in my opinion is based on absolute equality of status notwithstanding passes to the contrary in the smrities and elsewhere

सत्यार्थप्रकाश में महर्षि दयानन्द ने स्थापित किया है कि योग्यता अर्जित कर लेने पर शूद्र ब्राह्मण बन सकता है। पर आर्यसमाज के अतिरिक्त, आरक्षण आदि से कुछ सुविधाएँ देने के अतिरिक्त, क्या स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् शूद्र को किसी ने ब्राह्मण बनाया है जबकि वेद में राजा का यह कर्तव्य बताया है कि वह ऐसे प्रयत्न करे जिससे शूद्र द्विज बनें। देखिये-

आ संयतमिन्द्र णः स्वस्तिं शत्रुतूर्याय बृहतीममृध्राम्।
यया दासान्यार्याणी वृत्रा करो वज्रिन्त्सुतुका नाहुषाणि॥

- ऋग्वेद ६/२२/१०

अर्थात् हे राजन्! तू सत्य विद्या के दान और उपदेश के द्वारा शूद्र कुल में उत्पन्न हुए को भी द्विज बना। सब ओर से उन्हें ऐश्वर्य प्राप्त कराके और शत्रुओं का निवारण करके सुख की वृद्धि कर। ऐसी राज्य व्यवस्था हो तो कोई कुल के आधार पर अपमानित और लांछित न हो।

पाठकों को यह जानकारी देना भी उचित होगा कि वेद में कहीं भी कोई अन्यायमूलक व्यवस्था नहीं है परन्तु स्वार्थ के वशीभूत होकर लोगों ने या तो नकली वेदमंत्र बना दिए या वेदमन्त्रों के गलत अर्थ कर दिए।

उदाहरण के तौर पर सत्यार्थ प्रकाश का निम्न अवतरण देखें-

स्त्रीशूद्रौ नाधीयतामिति श्रुतेः।

स्त्री और शूद्र न पढ़ें यह श्रुति है।

(उत्तर) सब स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्यमात्र को पढ़ने का

अधिकार है। तुम कुआँ में पड़ो और यह श्रुति तुम्हारी कपोलकल्पना से हुई है, किसी प्रामाणिक ग्रन्थ की नहीं। और सब मनुष्यों के वेदादिशास्त्र पढ़ने-सुनने के अधिकार का प्रमाण यजुर्वेद के छब्बीसवें अध्याय में दूसरा मंत्र है -

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्याꣳशूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च॥

परमेश्वर कहता है कि (यथा) जैसे मैं (जनेभ्यः) सब मनुष्यों के लिये (इमाम्) इस (कल्याणीम्) कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख देने हारी (वाचम्) ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का (आवदानि) उपदेश करता हूँ, वैसे तुम भी किया करो। यहाँ कोई ऐसा प्रश्न करे कि जन शब्द से द्विजों का ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि स्मृत्यादि ग्रन्थों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ही के वेदों के पढ़ने का अधिकार लिखा है, स्त्री और शूद्रादि वर्णों का नहीं। उत्तर- (ब्रह्मराजन्याभ्याम्) इत्यादि, देखो परमेश्वर स्वयं कहता है कि हमने ब्राह्मण, क्षत्रिय (अर्य्याय) वैश्य (शूद्राय) शूद्र और (स्वाय) अपने भृत्य वा स्त्रियादि (अरणाय) और अतिशूद्रादि के लिये भी वेदों का प्रकाश किया है अर्थात् सब मनुष्य वेदों को पढ़-पढ़ा और सुन-सुनाकर, विज्ञान को बढ़ा के, अच्छी बातों का ग्रहण और बुरी बातों को त्यागकर के दुःखों से छूट कर, आनन्द को प्राप्त हों। कहिये, अब तुम्हारी बात मानें वा परमेश्वर की। परमेश्वर की बात अवश्य माननीय है। इतने पर भी जो कोई इसको न मानेगा वह नास्तिक कहावेगा, क्योंकि 'नास्तिको वेदनिन्दकः।' वेदों का निन्दक और न मानने वाला नास्तिक कहाता है।

क्या परमेश्वर शूद्रों का भला करना नहीं चाहता? क्या ईश्वर पक्षपाती है कि वेदों के पढ़ने-सुनने का शूद्रों के लिये निषेध और द्विजों के लिये विधि करे? जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रादि के पढ़ाने-सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक्

और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता? जैसे परमात्मा ने पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिये बनाये हैं, वैसे ही वेद भी सबके लिये प्रकाशित किये हैं और जहाँ कहीं निषेध किया है, उस का यह अभिप्राय है कि जिसको पढ़ने-पढ़ाने से कुछ भी न आवे, वह निर्बुद्धि और मूर्ख होने से शूद्र कहाता है।

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवं तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च॥ - मनु.१०/६५

जो शूद्र कुल में उत्पन्न होकर ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के समान गुण, कर्म, स्वभाव वाला हो तो वह शूद्र ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हो जाय। वैसे ही जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यकुल में उत्पन्न हुआ हो और उसके गुण-कर्म-स्वभाव शूद्र के सदृश हों तो वह शूद्र हो जाय। वैसे क्षत्रिय- वैश्य के कुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण वा शूद्र के समान होने से ब्राह्मण और शूद्र भी हो जाता है। अर्थात् चारों वर्णों में जिस-जिस वर्ण के सदृश जो-जो पुरुष वा स्त्री हो, वह-वह उसी वर्ण में गिनी जावे।

पाठकगण! जात्याभिमानी लोगों ने केवल असहाय गरीब लोगों का शोषण किया हो ऐसा नहीं है उन्होंने तो छत्रपति शिवाजी महाराज जैसे इतिहास पुरुष और समर्थ प्रतापी लोकप्रिय हिन्दू हृदय सम्राट को भी नहीं छोड़ा। हम यहाँ शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक में तथाकथित ब्राह्मणों द्वारा जो रोड़े अटकाए थे उसकी झलक देने के लिए कुछ सामग्री दे रहे हैं।

जदुनाथ सरकार ने 'Sivaji and his times' में लिखा है कि- अकबर के शासन काल में एक ब्राह्मण कृष्ण नरसिंह ने 'शूद्राचार शिरोमणि' नामक ग्रन्थ में स्थापित किया था कि कलियुग में एक भी क्षत्रिय शेष नहीं है। और क्योंकि राज्याभिषेक केवल क्षत्रियों का ही हो सकता है अतः अन्य कोई कितना भी प्रतापी क्यों न हो उसका विधिवत राज्याभिषेक नहीं हो सकता। अब यह एक व्यवस्था बन गयी जिसका उल्लंघन तत्कालीन समय में कोई नहीं कर सकता था। लोकमत के अनुसार भोंसले न क्षत्रिय थे न द्विज। उनके प्रपितामह भूमि जोतने वाले किसान थे अतः शिवाजी को क्षत्रिय मानने को कोई तैयार नहीं था। उस समय तक वैदिक वर्ण व्यवस्था पूर्णतः नष्ट हो चुकी थी अन्यथा शिवाजी जैसे वीर और राष्ट्रभक्त से बढ़कर क्षत्रिय कौन हो सकता था? परन्तु उस समय में कृष्ण नरसिंह की व्यवस्था का उल्लंघन कर, अगर शिवाजी का राज्याभिषेक होता तो उसमें कोई ब्राह्मण सम्मिलित होता इसकी आशा न थी।

शिवाजी के प्रतिनिधि बालाजी आवजी काशी में गागा भट्ट के यहाँ गए। इनके पूर्वज गोविन्द भट्ट पैठन के ही थे। गागा जी को इतना धन दिया गया कि उसे रिश्वत का नाम दिया जाय तो भी अनुचित न होगा। बालाजी के अनुरोध पर गागा भट्ट ने 'कायस्थ धर्म प्रदीप' का प्रणयन किया जिसमें 'शूद्राचार शिरोमणि' के सिद्धान्तों का खण्डन कर कायस्थों के क्षत्रियोचित् संस्कारों का अनुमोदन किया। गागा भट्ट बड़े तामझाम के साथ रायगढ़ पधारे। शिवाजी की वंशावली तैयार की गयी तथा

उनका सम्बन्ध उदयपुर के महाराणाओं के सिसोदिया वंश से स्थापित किया गया।

हेनरी ऑक्सेंडन ने शिवाजी के भव्य राज्याभिषेक का जिक्र किया है। जहाँ ब्राह्मण विरोध कर रहे थे वहाँ दस हजार ब्राह्मण इस अवसर पर आये जिनकी परिवार सहित संख्या पचास हजार हो गयी। चार महीने तक इनको हर प्रकार से तृप्त किया गया। इस अवसर पर एक लाख से ऊपर लोग रायगढ़ में आये।

अगर शिवाजी का उपनयन नहीं होता तो भी कुछ नहीं हो सकता था। अतः यह गागा भट्ट ही था जिसने शिवाजी का यज्ञोपवीत संस्कार मई १६७४ को सम्पन्न कराया। इतना सब होने पर भी शिवाजी को वेदोच्चारण सुनाने के प्रश्न पर भारी विरोध हुआ। क्योंकि शूद्र को वेदमंत्र नहीं सुनाये जा सकते थे। गागा भट्ट को भी झुकना पड़ा।

विशेष बात यह है कि सबको राजी रखने के लिए इस अवसर पर प्रभूत व्यय किया गया। जदुनाथ सरकार के अनुसार ५० लाख रुपये इस समारोह पर खर्च किये गए। १६७४ के ५० लाख। तो यह अवस्था मध्ययुगीन व औपनिवेशिक भारत की थी। ऐसी स्थिति में 'जन्मजाति जैसे विषधर के फन को कुचलने का सर्वाधिक प्रयास जिनके द्वारा किया गया वे अन्य कोई नहीं महर्षि दयानन्द और उनके शिष्य थे।' इस अमानवीयता के प्रति सचेत करते हुए, महर्षि को श्रद्धांजलि देते हुए कवि ने ठीक ही कहा था- 'लो अछूतों को लगा गले हिन्दुओं वरना ये लाल गैरों के घर जाएँगे।'

कवि तन्मय बुखारिया ने महर्षि के प्रति सही कहा है-

प्रचलित रीति-कुरीति, रुढ़ियों के बन्धन को तोड़ा,
भारतीय संस्कृति के मूलों से भारत को जोड़ा।
जिसका कोई नहीं जगत् में, तुम उसके सम्बल थे,
पद-दलित, हरिजनों, अछूतों, विधवाओं के बल थे।।

महापुरुषों के अहिंसाव्रत की अनुपालना

योग दर्शन में महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग का प्रथम अंग 'यम' प्रतिपादित किया है। यम हमारी स्वस्थ मानसिकता और आन्तरिक शुद्धि का द्योतक है। इसमें सदाचार के आधारभूत नियम हैं। यम पाँच हैं। योगदर्शन का सूत्र है-

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः। - योग. २/३०

अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना) ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह (संग्रह न करना) ये पाँच यम हैं। यम में प्रथम स्थान अहिंसा का है। अहिंसा से तात्पर्य है कि मन, वाणी तथा व्यवहार से किसी को दुःख न देना। हिंसा मानव समाज में दुःख का एक प्रमुख कारण है। अहिंसा और प्रेम का मार्ग जन-जन के आत्म कल्याण का, योग-साधना से आत्म कल्याण का प्रथम सोपान प्रतिपादित किया है।

महापुरुषों और ऋषि मुनियों ने इस अहिंसाव्रत को अपने आत्मकल्याण की सीमा से बाहर व्यापक क्षेत्र में जन-जन के कल्याण के लिए अपने जीवन में विकटतम परिस्थितियों में धारण किया तथा अपने अनुयायियों को इस पथ पर चलकर न केवल मानव मात्र अपितु प्राणिमात्र का हित करने का सन्देश दिया। महात्मा गौतम बुद्ध प्रेम और अहिंसा की प्रतिमूर्ति थे। महावीर स्वामी ने प्राणिमात्र के प्रति अहिंसा का उपदेश दिया। उनके कानों में कीलें ठोककर उनका ध्यान भंग करने का प्रयास करने वाले अबोध किसान के प्रति कोई प्रतिक्रिया नहीं की और समाधि में लीन रहे। इसके पश्चात् उनके अनुयायियों ने भी उसे ढूंढ़कर दण्ड देने का प्रयास किया हो, इसका कोई उल्लेख नहीं। उसके प्रति हिंसा के भाव को स्थान दिया ही नहीं गया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती एक सिद्ध योगी और कर्मठ संन्यासी होने के साथ ही अहिंसा के भाव से ओतप्रोत थे। अठारह घण्टे की समाधि में लीन रहने वाले महर्षि दयानन्द की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे एक क्रान्तिकारी समाज सुधारक भी थे। धार्मिक आडम्बर और सामाजिक कुरीतियों का उन्होंने निर्भीकता से विरोध किया और वैदिक धर्म तथा तदनुसार सामाजिक जीवन का प्रसार प्रचार किया। धार्मिक कर्मकाण्ड, मूर्ति-पूजा, श्राद्ध-तर्पण आदि के विधान को अवैदिक सिद्ध करते हुए यज्ञ तथा वैदिक मन्त्रों से ईश्वर की आराधना के महत्व को समझाया। सामाजिक जीवन में जातिप्रथा, छुआछूत, नारी उत्पीड़न, बाल-विवाह, विधवाओं का शोषण तथा अशिक्षा आदि का वेदों के आधार पर विरोध किया। शिक्षा के लिए वैदिक विद्यालय आरम्भ किये। ऋषि को आजीवन पौराणिक अनुयायियों तथा पीठासीन धर्माचार्यों के घोर विरोध को सहना पड़ा। ऋषि में ज्ञान गरिमा, स्मरणशक्ति, तर्कशक्ति और वक्तृत्व की अद्भुत प्रतिभा थी। शास्त्रार्थ में परास्त होने की स्थिति में पौराणिक पण्डितों और प्रतिष्ठित विद्वानों के द्वारा ऋषि पर अनेक बार हिंसक प्रहार किये गये। उन्हें गालियाँ दी गईं, पत्थरों की वर्षा की गई, विषधर फैंके गये, अठारह बार विष दिया गया, लेकिन वह अहिंसा का पुजारी अपने सुधार कार्य में सतत् प्रगतिशील रहा। विरोधी समुदाय के प्रति किसी भी प्रकार की हिंसा का भाव प्रगट नहीं किया और ना ही अपने अनुयायियों को ऐसा करने दिया। उदाहरण स्वरूप अमृतसर की घटना है- जून १८७६ में लाहौर में आर्यसमाज की स्थापना करके स्वामी जी अमृतसर आये। स्वामी जी मूर्तिपूजा और धार्मिक अन्धविश्वास तथा आडम्बरों की आलोचना करते थे। ऋषि के प्रभावशाली भाषणों से विरोधियों का आक्रोश बढ़ गया। उन्होंने स्वामी जी को जान से मार डालने की धमकी दी। इस पर भी स्वामी जी निर्विकार भाव से अपने व्याख्यान देते रहे। कुछ विरोधी स्वामी जी पर पत्थर फेंकने लगे। स्वामी जी के चेहरे तथा अंगों से खून टपक रहा था। वे अपने रूमाल से खून पोंछते जाते थे और व्याख्यान देते जाते थे। आखिर पुलिस ने उन उपद्रवियों को हटाया। स्वामी जी या उनके अनुयायियों ने अपनी ओर से

कोई प्रतिकार नहीं किया।

ऋषि अकेले थे और विरोधी असंख्य थे। ऋषि में ब्रह्मचर्य और वैदिक ज्ञान का बल और तेज था। शास्त्रार्थ में विरोधी टिक नहीं पाते थे। लेकिन अपनी गद्दी के स्वार्थ और अहंकार के कारण उन्होंने भाषणों के समय पर पत्थर वर्षा की, अपशब्द कहे और लगभग १८ बार विष दिया। एक घटना अनूपशहर की है- एक ब्राह्मण ने स्वामीजी को पान में जहर दिया। स्वामी जी को उबकाई आई और समझ गये कि पान में

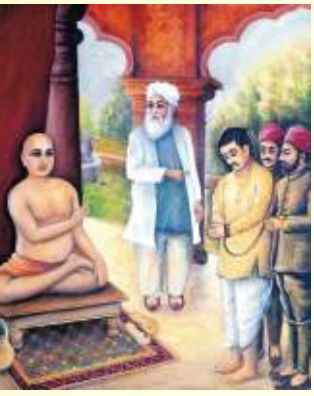

विष था। उन्होंने तुरन्त यौगिक क्रियाओं से विष बाहर निकाल दिया। यह बात शहर में फैल गई। वहाँ के तहसीलदार सैयद मुहम्मद अपराधी को पकड़कर स्वामीजी के सामने लाये उन्होंने कहा यह अपराधी है। इसने आपको जहर दिया। आप जैसा कहें मैं इसे दण्ड दूँ। स्वामी जी का उत्तर था मैं आपकी कर्तव्यनिष्ठा से प्रभावित हूँ। आप इसे छोड़ दें। मैं संसार को कैद से मुक्त कराने आया हूँ। यदि दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोड़ सकते तो हम संन्यासी अपनी उदारता कैसे छोड़ दें?

जोधपुर में वारांगना तथा विरोधी समुदाय के षड्यन्त्र से स्वामी जी के विश्वस्त रसोईये के द्वारा जो कालकूट विष दिया गया वह न केवल प्राणघातक रहा अपितु उसके कारण ऋषि को २९ सितम्बर १८८३ से ३० अक्टूबर १८८३ तक असह्य शारीरिक पीड़ा सहन करनी पड़ी। सारे शरीर में फफोले हो गये, वमन, दस्त आदि। स्वामी जी ने जैसे ही जाना कि विष पाचक ने दिया है- उन्होंने उसको बुलाकर कहा कि- तुमने मुझे विष देकर अच्छा नहीं किया है। हो सकता है कि विधाता के विधान में यही हो। ये रुपये रख लो, तुम्हारे काम आयेंगे। यहाँ से नेपाल चले जाओ। यह है अहिंसाभाव की पराकाष्ठा! विष देने वाले घातक की सुरक्षा में तत्परता और असीम उदारता।।

ऋषि के निर्वाण के पश्चात् ऋषि के अनुयायियों ने भी उनके अहिंसा भाव की अनुपालना की। उन्होंने न तो उस पाचक को ढूंढकर दण्ड देने का प्रयास किया और ना ही इस कार्य में लिप्त अन्य व्यक्तियों से प्रतिशोध लेने का प्रयास किया। आर्यसमाज के आयोजनों और कार्यक्रमों में ईश्वर आराधना और ऋषि के आदर्शों का गुणगान होता है। किसी भी घातक या विष देने वाले के प्रति घृणा या आक्रोश के शब्दों का प्रयोग कभी नहीं होता।

महात्मा गाँधी सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। स्वाधीनता आन्दोलन में ये दोनों उनके प्रबल अस्त्र-शस्त्र थे। अहिंसा को अपने जीवन में प्रायः सभी महापुरुषों ने अपनाया है। लेकिन वह उनके व्यक्तिगत तथा सामाजिक क्रिया कलापों तक सीमित रहा है। राजनीति के क्षेत्र में विशेषकर परतन्त्र भारत में अंग्रेज शासकों की प्रबल सत्ता के विरुद्ध असहयोग और सविनय अवज्ञा आन्दोलनों को अस्त्र-शस्त्र बनाकर सम्पूर्ण राष्ट्र के जनजन में शोषण के विरुद्ध अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए तथा स्वाधीनता के लिए क्रान्ति की लहर फैलाने का महनीय कार्य महात्मा गाँधी ने किया। उन्होंने किसी भी विषम परिस्थिति में हिंसा को स्वीकार नहीं किया। इसका एक उदाहरण फरवरी १९२२ का है। गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन में समाज के सभी वर्गों की जनता में जोश और भागीदारी बढ़ती जा रही थी। फिर जैसे ही यह आन्दोलन

अपने चरम बिन्दु तक पहुँचा वैसे ही फरवरी १९२२ में चौरी-चोरा, उत्तर प्रदेश में भयानक द्वेष के रूप में इसका अन्त हुआ। आन्दोलन द्वारा हिंसा का रूप अपनाने की सम्भावना को देखते हुए गाँधी जी ने इस व्यापक आन्दोलन को वापस ले लिया। उन्होंने कभी भी सफलता के लिए हिंसा से समझौता नहीं किया। उनके अटूट अहिंसा भाव के प्रति सारा विश्व नतमस्तक है। २ अक्टूबर को महात्मा गाँधी का जन्मदिन भारत में गाँधी जयन्ती के रूप में मनाया जाता है और सम्पूर्ण विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम सत्यार्थ प्रकाश में आर्यावर्त्त (भारत) की पराधीनता पर खेद प्रकट किया था। भारत की दीनहीन जनता के प्रति दुःख प्रगट किया था और यह घोषणा की थी कि जो स्वदेशी शासन होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। ब्रिटिश शासन की पराधीनता के आतंक में स्वाधीनता, स्वभाषा और अपनी संस्कृति के प्रति गौरव जगाने का साहसिक कार्य महर्षि दयानन्द ने ही सर्व प्रथम किया। लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल का कथन है- 'स्वामी दयानन्द सरस्वती की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने देश को दलदल में गिरने से बचाया। वास्तव में उन्होंने स्वाधीनता की नींव

रखी।' स्वाधीनता की इस नींव पर अनेक क्रान्तिकारियों ने संघर्ष करते हुए बलिदान दिया।

महात्मा गाँधी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के संकल्प को व्यापक गति दी। उनकी विशेष देन यह है कि उन्होंने अहिंसा के बल पर सामाजिक जागृति के द्वारा प्रबल जनसहयोग से स्वराज के लिए राजनैतिक क्रान्ति की लहर फैला दी। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर स्वदेशी अपनाओ का जन आन्दोलन किया। गाँवों में रहकर गाँवों को स्वच्छ बनाने का अभियान चलाया। किसानों की समस्याओं का समाधान करते हुए चरखों से सूत कातना, वस्त्र निर्माण तथा अन्य ग्रामोद्योगों को प्रोत्साहित करते हुए गाँवों को आत्मनिर्भर बनाने की

योजनायें क्रियान्वित कीं। सामाजिक कुरीतियाँ अस्पृश्यता आदि के निवारण कि लिए जनता को प्रेरित किया। जन-जन के प्रति उनके आत्मीय भाव को अनुभव करते हुए इस देश की जनता ने उन्हें बापू (पिता) का सम्मान दिया। राष्ट्र के निर्माण कार्यों और राष्ट्रहित में उनके व्यापक योगदान के प्रभाव से उन्हें राष्ट्रपिता के सम्मान से अलंकृत किया।

हम सब देशवासी राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की १५०वीं जयन्ती, वर्ष-पर्यन्त मना रहे हैं। नाथूराम गोडसे ने ३० जनवरी १९४८ में उनकी हत्या की थी। हत्या करना सामान्य रूप से एक जघन्य अपराध है, फिर महात्मा गाँधी जी जैसे महामानव की हत्या का अपराध अक्षम्य है। गोडसे को इस अपराध का दण्ड भी दिया जा चुका है। इस घटना को जनवरी में ७२ वर्ष हो चुके हैं। लेकिन अहिंसा भाव से ओतप्रोत उस महान् विभूति महात्मा गाँधी के अनुयायी गोडसे के प्रति घृणा और आक्रोश से अब तक आतंकित हैं। क्या यह गाँधी जी के अहिंसा भाव के अनुरूप है?

प्रज्ञा ठाकुर ने गोडसे को देशभक्त कह दिया। इस पर गाँधीजी के अनुयायियों का क्रोध चरम सीमा पर आ गया। गोडसे को आतंककारी कहा गया। विवाद को शान्त करने के लिए सांसद प्रज्ञा ठाकुर ने संसद में माफी माँगी। गाँधी जी के अनुयायियों का क्रोध और प्रतिशोध भाव इतना उग्र हो गया था कि एक विधायक महोदय ने प्रज्ञा ठाकुर को साक्षात् जलाने तक का बयान दे दिया। प्रज्ञा का आक्षेप है- 'राहुल गाँधी ने मुझे आतंकी कहा। अब उनकी पार्टी के विधायक मुझे जिन्दा जलायेंगे।' ये लोग व्यक्तिगत लाभ और राजनीति की संकीर्ण विचारधारा से ऊपर उठकर शुद्ध मनोभाव से बापू के प्रति आस्था रखने वाले स्वयं यह आत्मावलोकन करें कि क्या अहिंसा के उस अप्रतिम पुजारी के द्वारा बताये गये मार्ग की उनके अहिंसा व्रत की अनुपालना की जा रही है?

महात्मा गाँधी को हमने राष्ट्रपिता का सम्मान दिया है। हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति हमें हमारे राष्ट्रपिता से उत्तराधिकार में मिली है। देश के शहीदों ने अमानवीय यातनायें सहकर, अपने प्राणों का बलिदान देकर हमको स्वाधीनता की विरासत दी है। देश के सैनिक और सिपाही आज भी आन्तरिक सुरक्षा और देश की सीमाओं की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे रहे हैं। दूसरी ओर आन्दोलनों के नाम पर हिंसा और राष्ट्रीय सम्पत्ति का विध्वंस करते हुए देश की अपूरणीय क्षति की जा रही है।

सरकार के किसी भी कदम से असहमत होने पर आन्दोलन करने वालों को संविधान राष्ट्रीय सम्पत्ति की तोड़फोड़ करने का अधिकार नहीं देता। राष्ट्र की सम्पत्ति के नुकसान से देश की अर्थव्यवस्था की और भी अधिक क्षति हो रही है। इस पर अंकुश लगाने का प्रत्येक नागरिक का नैतिक कर्तव्य है। एक ओर हम राष्ट्रपिता गाँधी की १५०वीं जयन्ती मना रहे हैं और दूसरी ओर अनेक राज्यों में हिंसा का ताण्डव है। महात्मा जी के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धा तभी सार्थक है जब हम उनके आदर्श का अनुसरण करते हुए समाज में प्रेम, विश्वास और संगठन का वातावरण बनायें।

हमारा देश शान्ति और सह अस्तित्व की विचारधारा के लिए विश्वविख्यात है। वर्तमान समय में भी विश्वशान्ति के लिए चिन्तनशील मनस्वीजन विश्व में बढ़ते हुए आतंक, अत्याचार और अशान्ति के समाधान लिए भारत से आशा करते हैं। दिसम्बर २०१९ में शान्ति और अहिंसा पर आयोजित १०वें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में अमेरिकी गाँधी के नाम से प्रतिष्ठित शान्ति कार्यकर्त्री बनी मेयर ने कहा कि पूरी दुनिया में फैली हुई हिंसा की भयावह स्थिति का यदि समाधान करना है तो भारतीयता की भावना और महात्मा गाँधी के आदर्शों को याद करना होगा। महात्मा गाँधी के आदर्शों से जनमानस को परिचित कराने के उद्देश्य से ही उनकी जयन्ती मनाने का यह आयोजन है। उनके अहिंसा के सिद्धान्त की अनुपालना में ही हम आर्यों की सफलता है।

-डॉ. गायत्री पंवार
A-२५, वैशाली नगर,
जयपुर- ३०२०२१ (राज.)

आखिर कब जानेंगे भारतरत्न लाल बहादुर शास्त्री जी की मौत का सच?

११ जनवरी आते ही छोटे से कद-काठी वाला एक ऐसा चेहरा स्मृति में कौंधने लगता है जो अपने जीवन की असंख्य कठिनाइयों से लड़ते हुए देश को तो विजय दिला गया किन्तु स्वयं अपनी जिन्दगी को नहीं बचा पाया। उनके जीवन यात्रा का वृत्तांत तो सबको पता है किन्तु जीवन के अंतिम कुछ घंटों में उनके साथ क्या हुआ यह गोपनीयता के पिटारे में अभी तक बन्द है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के करोड़ों नागरिकों द्वारा चुने गए यशस्वी प्रधानमंत्री की एक महान् विजय के तुरन्त बाद असमय, विदेशी धरती पर रहस्यमय मौत गत ५४ वर्षों से मात्र एक पहेली बनी हुई है। जिसे जानने के लिए ना सिर्फ उनकी पत्नी, बेटे, पोते या अन्य परिजन बल्कि सम्पूर्ण देशवासी उत्सुक हैं।

२ अक्टूबर १९०४ को देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश की धार्मिक नगरी वाराणसी से मात्र सात मील दूर एक छोटे से रेलवे टॉउन, मुगलसराय में एक स्कूल शिक्षक के घर जन्मे श्री लाल बहादुर शास्त्री के सर से मात्र डेढ़ वर्ष की उम्र में ही पिता का साया उठ गया। घर पर सब उन्हें 'नन्हे' के नाम से पुकारते थे। चाहे कितनी ही भीषण सर्दी, गर्मी या बरसात हो, वे कई मील दूर तक पैदल नंगे पाँव ही विद्यालय जाते थे। विदेशी दासता से मुक्ति हेतु, वे जब केवल ग्यारह वर्ष के थे, तब से ही, उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर कुछ करने का मन बना लिया था।

१९२७ में मिर्जापुर की ललिता देवी से हुई उनकी शादी में दहेज के नाम पर एक चरखा एवं हाथ से बुने हुए कुछ मीटर कपड़े ही थे। १९३० में महात्मा गाँधी ने जब नमक कानून को तोड़ते हुए दांडी यात्रा की, शास्त्री जी भी पूरी ऊर्जा के साथ स्वतंत्रता के इस संघर्ष में कूद पड़े। अनेक विद्रोही अभियानों का नेतृत्व करते हुए वे कुल सात वर्षों तक ब्रिटिश जेलों में भी रहे।

१९४६ में जब कांग्रेस सरकार का गठन हुआ तो इस 'छोटे से डायनमो' को पहले अपने गृह राज्य उत्तर प्रदेश का संसदीय सचिव तथा बाद में गृहमंत्री बनाया गया। भीड़ नियंत्रण हेतु लाठी के स्थान पानी की बौछारों के प्रयोग तथा कंडक्टर के पद पर महिलाओं की नियुक्ति, उन्हीं के कार्यकाल में पहली बार हुई। १९५१ में वे दिल्ली आ गए एवं केंद्रीय मंत्रिमंडल के कई विभागों का प्रभार संभाला- रेल मंत्री, परिवहन एवं संचार मंत्री, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री तथा गृह मंत्री। यहाँ तक कि प्रधान मंत्री नेहरू जी की बीमारी के दौरान वे बिना विभाग के मंत्री भी रहे।

एक रेल दुर्घटना, जिसमें कई लोग मारे गए थे, के लिए स्वयं को जिम्मेदार मानते हुए उन्होंने रेल मंत्री के पद से जब इस्तीफा दिया तो सम्पूर्ण देश एवं संसद ने उनकी इस अभूतपूर्व पहल की भूरि-भूरि प्रशंसा की। १९५२, १९५७ एवं १९६२ के आम चुनावों में पार्टी की जबर्दस्त सफलता में उनकी अद्भुत सांगठनिक क्षमता का बड़ा योगदान था। तीन दशकों तक देश को अपनी समर्पित सेवा, उदात्त निष्ठा, अपूर्व क्षमता, विनम्रता, सहिष्णुता एवं दृढ़ इच्छा-शक्ति के बल पर शास्त्री जी लोगों के दिलो-दिमाग पर छा गए। उनकी प्रतिभा और निष्ठा ने ही नेहरू जी की मृत्यु के बाद ९ जून १९६४ को उन्हें प्रधानमंत्री बनाया। २६ जनवरी १९६५ को खाद्य के क्षेत्र में देश को

आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से 'जय जवान, जय किसान' का नारा उन्होंने ही दिया था तथा देश की आर्थिक दशा को देखते हुए ही उन्होंने देश वासियों से सप्ताह में एक दिन उपवास रख अन्न बचाने का आग्रह किया जिसे सबसे पहले उन्होंने स्वयं से प्रारम्भ किया। **सादगी, देशभक्ति और ईमानदारी के लिए, मरणोपरान्त, १९६६ में उन्हें 'भारत-रत्न' से सम्मानित किया गया। शास्त्री जी के नेतृत्व में ही भारत-पाकिस्तान के बीच**

१९६५ में अप्रैल से २३ सितम्बर के बीच ६ महीने तक युद्ध चला। जनवरी, १९६६ में दोनों देशों के शीर्ष नेता तब के रूसी क्षेत्र में आने वाले ताशकंद में शान्ति समझौते के लिए रवाना हुए। पाकिस्तान की ओर से राष्ट्रपति अयूब खान वहाँ गए। १० जनवरी को दोनों देशों के बीच शान्ति समझौता भी हो गया किन्तु इसके मात्र १२ घण्टे बाद यानि ११ जनवरी को तड़के १:३२ बजे अचानक उनकी मौत की खबर ने सबको चौंका दिया।

आधिकारिक तौर पर तो कहा जाता रहा है कि उनकी मौत दिल का दौरा पड़ने से हुई। और १९५९ में भी उन्हें एक हार्ट अटैक आया था। किन्तु एक ऐतिहासिक समझौते के चन्द घण्टों के अन्दर ही आधी रात को परदेश में प्रधानमंत्री की मृत्यु ने ना सिर्फ उनके साथ गए प्रतिनिधि मण्डल बल्कि, सम्पूर्ण विश्व को सकते में डाल दिया।

कुछ आरटीआई के जबाव, पुस्तकों के उद्धरण व शास्त्री परिवार के लोगों व जनमानस में उठे प्रश्नों पर गौर करें तो पता चलता है कि मरने से ३० मिनट पहले तक, यानि रात्रि १२:३० बजे तक वे बिलकुल ठीक थे। १५ से २० मिनट में तबियत खराब हुई और वे हमसे विदा हो लिए। यह भी कहा जाता है कि उन्हें उनके साथ गए अधिकारियों व स्टाफ से दूर अकेले में रखा गया। तथा साथ गए कुक को भी ऐन मौके पर बदल दिया गया। उस रात खाना उनके नौकर रामनाथ ने नहीं, बल्कि सोवियत संघ में भारतीय राजदूत टी एन कौल के पाकिस्तानी कुक जान मोहम्मद ने बनाया था। घटना के बाद उस बावर्ची को हिरासत में तो लिया गया लेकिन, बाद में उसे छोड़ दिया गया। कहते हैं कि वह पाकिस्तान भाग गया जिसे इन्दिरा जी ने आजीवन घर बैठे पेंशन भी दी।

उनका आवास ताशकंद शहर से १५-२० किमी दूर रखा गया तथा उनके कमरे में घण्टी व फोन तक नहीं था। शायद इसी कारण उस आधी रात को जब शास्त्री जी खुद चलकर सेक्रेटरी जगन्नाथ के कमरे में गए तब वह दर्द से तड़प रहे थे। उन्होंने दरवाजा नाक कर जगन्नाथ को उठाया और डॉक्टर को बुलाने का आग्रह किया। जगन्नाथ ने उन्हें पानी पिलाया और बिस्तर पर लिटा दिया। उनके निजी चिकित्सक डॉक्टर आर.एन. चुग ने पाया कि उनकी सांसें तेज चल रही थीं और वो अपने बेड पर छाती को पकड़कर बैठे थे। इसके बाद डॉक्टर ने इंट्रा मस्कूलर इंजेक्शन दिया और उसके तीन मिनट बाद ही शास्त्री जी का शरीर शान्त होने लगा और सांस की गति धीमी पड़ गई। इसके बाद सोवियत डॉक्टर को बुलाया गया किन्तु इससे पहले कि सोवियत डॉक्टर इलाज शुरू करते, १:३२ बजे शास्त्री की मौत हो गई।

कहते हैं कि शास्त्रीजी की मौत वाली रात दो ही गवाह मौजूद थे। एक थे उनके निजी चिकित्सक आरएन चुग और दूसरे थे उनके सेवक रामनाथ। दोनों ही शास्त्रीजी की मौत पर १९७७ में गठित राजनारायण संसदीय समिति के समक्ष पेश नहीं हो सके क्योंकि दोनों को ही ट्रक ने टक्कर मार दी।

इसमें डॉक्टर साहब तो मारे गए, जबकि रामनाथ अपनी स्मरण शक्ति गंवा बैठे। बताते हैं कि समिति के सामने गवाही

से पहले रामनाथ ने शास्त्रीजी के परिजनों से 'सीने पर चढ़े बोझ' का जिक्र किया था, जिसे वह उतारना चाहते थे।

यह भी कहा जाता है कि शायद उनके हाथ ताशकंद में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की मौत से जुड़ा कोई सुराग मिल गया था! पत्रकार ग्रेगरी डगलस से साक्षात्कार में सीआईए के एजेण्ट राबर्ट क्रोले ने दावा किया था कि शास्त्रीजी की मौत का प्लाट सीआईए ने तैयार किया था। उनके मृत शरीर का ना तो पोस्टमार्टम किया गया और ना ही मौत की जाँच रिपोर्ट को सार्वजनिक किया गया। शास्त्री जी के बेटे सुनील शास्त्री व अन्य परिजनों ने भी इस हेतु सरकारों से अनेक बार अपील करते हुए कहा था कि उनकी मृत्यु प्राकृतिक नहीं थी। उनकी छाती, पेट और पीठ पर नीले निशान थे और कई जगह चकत्ते

पड़ गए थे, जिन्हें देखकर साफ लग रहा था कि उन्हें जहर दिया गया है। पत्नी ललिता शास्त्री का भी यही मानना था कि अगर हार्टअटैक आया तो उनका शरीर नीला क्यों पड़ गया था! यहाँ वहाँ चकत्ते क्यों पड़ गए। यदि पोस्ट मार्टम होता तो उनकी मौत का सच अवश्य सामने आता।

यह आज तक स्पष्ट नहीं है कि शास्त्रीजी की मौत या उनके अंतिम समय से जुड़े दस्तावेज किसके आदेश से गोपनीय करार दिए गए? एक श्रेष्ठ नेता, पूर्व प्रधान मंत्री व भारतरत्न की विदेश में विस्मयकारी असमय मृत्यु की सच्चाई को जानने से देश को आखिर क्यों वंचित रखा जा रहा है? कम से कम वर्तमान सरकार को इस मामले में पहल कर नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की तरह भारत के इस बहादुर लाल से जुड़े दस्तावेजों को भी सार्वजनिक करना चाहिए।

-विनोद बंसल (राष्ट्रीय प्रवक्ता-विहिप)
३२९, IInd Floor, सन्त नगर
ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- ११००६५

फार्म IV

समाचार पत्र के स्वामित्व और अन्य विशिष्टियों के बारे में विवरण जो प्रत्येक वर्ष फरवरी के अंतिम दिन के पश्चात् प्रथम अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

१. प्रकाशन का स्थान:– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
२. प्रकाशन की नियत अवधि:– मासिक
३. मुद्रक का नाम:– अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयता:– भारतीय
पता:– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
४. प्रकाशक का नाम:– अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयता:– भारतीय
पता:– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
५. सम्पादक का नाम:– अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयता:– भारतीय
पता:– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
६. उन व्यक्तियों के, जो समाचार पत्र के स्वामी हैं और उन भागीदारों या शेयरधारकों के, जो कुल पूँजी के 1 प्रतिशत से अधिक अंश के धारक हैं, नाम और पते।
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल
गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

मैं अशोक कुमार आर्य घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई विशिष्टियाँ मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

तारीख:– ०७.०३.२०२०
प्रकाशक के हस्ताक्षर

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

We felt extremely happy, lucky, satisfactory with the visit to the Place which is really amazing. Knowledge of Mr. Chandra Kant sir is outstanding, extra ordinary.
The Administrator/President of this Satyarth Prakash Trust Sh. Ashok Arya sir is very nice and polite and visionary person.
We wish the Knowledge awake here, should be imparted at school level.

- Mr. Raies Ahmed, Mr. Avinash Megwan (Jammu & Kashmir)

यहाँ ज्ञान की बातें सुनकर सत्यता को जानकर बड़ा ही आत्मा को अच्छा लगा। आत्मा को सुकून मिला। अब सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ को मैं अवश्य पढ़ूँगी (जो मैं यहाँ की बुकशॉप से खरीदकर ले जा रही हूँ) जिससे महान् आत्मा स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं को पढ़कर अवश्य ही मेरे ज्ञान में वृद्धि होगी। True Knowledge always enlighten others.

- बी. के. रीता, ब्रह्माकुमारीज, उदयपुर

ऋषि के वेदभाष्य से ही सबका कल्याण

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय

प्रश्न- साधारण भाषा में हम कैसे जानें कि ऋषि कौन होता है?

उत्तर- साधारण भाषा में ऋषि उन धार्मिक पुरुषों को कहते हैं जिनके अन्तःकरण में जगदीश्वर अच्छे प्रकार प्रकाशित होता रहता है तथा जो परमेश्वर की कामना करने वाले, उसकी आज्ञा में वर्तमान विद्वानों के द्वारा ईश्वर के साथ समागम से ईश्वर प्रसिद्ध अर्थात् जाना जाता है।

प्रश्न- वह ईश्वर इन धर्मात्मा पुरुषों में किसके अर्थ प्रकट होता है?

उत्तर- आत्माओं में ज्ञान का प्रकाश करते रहने के लिए, अज्ञान और दरिद्रता दूर करने के अर्थ तथा विज्ञान धन और चक्रवर्त्ति राज्य देने के लिए, जिससे मनुष्यों को कभी भी दुःख की प्राप्ति न हो, वह जगदीश्वर इन ऋषि पुरुषों से प्रसिद्ध होता है।

प्रश्न- यह आपकी ही स्वोद्भूत कल्पना है अथवा इसमें कोई प्रमाण भी है?

उत्तर- इसमें वेद से बढ़कर उत्तम प्रमाण और किसका हो सकता है? देखिए-

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या्ऽअपेशसे।
समुषद्भिरजायथाः।। - यजु. २९/मं.३७

हे (मर्य्या) मनुष्या! (उद्भिः) परमेश्वरं कामयमोनेस्तदाज्ञायां वर्तमानैर्विद्वद्भिःर्युष्माभिः सह समागमे कृते सत्येव (अकेतवे) अज्ञान विनाशाय,(केतुं) प्रज्ञानम् (अपेशसे) दारिद्र्यविनाशाय (पेशः) चक्रवर्त्तिराज्यादि सुखसम्पादकं धनं च (कृण्वन्) कुर्वन् सन् जगदीश्वरः (अजायथाः) प्रसिद्धो भवतीति वेदितव्यम्।

(महर्षि भाष्य)

हे मनुष्यो! परमेश्वर की ही कामना करने वाले आपकी आज्ञा में जो रमण करने वाले वर्तमान विद्वानों के द्वारा समागम होने पर ही (अकेतवे) अज्ञान विनाश के लिए (केतुं) प्रज्ञान, (अपेशसे) दारिद्र्य विनाश के लिए (पेशः) चक्रवर्त्तिराज्यादि सुखसम्पादक धन (कुर्वन्) करते हुए जगदीश्वर (यजायथाः) प्रसिद्ध होता है, ऐसा जानना चाहिए।

प्रश्न- उस ईश्वर में क्या स्थित है?

उत्तर- उस ईश्वर में पृथिव्यादि सब लोक, सब पदार्थ स्थित हैं। तथा जिसमें अनित्य कार्य जगत् और सब वस्तुओं के कारण स्थित हो रहे हैं।

प्रश्न- साधारण रूप से विद्वान् पूछते हैं कि क्या ईश्वर से पृथक् इन पदार्थों के मध्य और कोई नहीं हो सकता?

उत्तर- नहीं! वही ईश्वर इन सब पृथिव्यादि लोक तथा जीवों के बीच में अन्तर्यामिरूप से परिपूर्ण हो भर रहा है।

प्रश्न- इसका निष्कर्ष क्या निकला?

उत्तर- इसका निष्कर्ष यह निकला कि वह सब पृथिव्यादि लोक और जीवों के अन्तः=भीतर अन्तर्यामि रूप से परिपूर्ण है, ऐसा जानकर अपने ही अन्तः अर्थात् अन्तःकरण में खोजो या जानो!

प्रश्न- इस प्रकार जानकर क्या होगा?

उत्तर- इस प्रकार जानने से वह ईश्वर को अपने आत्मा में जान लेता है तथा सब पृथिव्यादि लोकों वा पदार्थों का भी ज्ञान होता है, और वह मनुष्य ऋषि संज्ञा को प्राप्त हो जाता है।

प्रश्न- क्या ऐसे ही ऋषियों का भाष्य जो सर्वविद्याविद् वेदपारग होते हैं- सर्व कल्याण कर निर्भ्रान्त होता है?

उत्तर- निश्चय रूप से! ऐसे ऋषि लोगों के द्वारा किया गया सरल भाष्य ही सब सन्देहों वा भ्रान्तियों को दूर करने वाला होता है। क्योंकि ये ऋषि ईश्वर के समागम से स्वयं निर्भ्रान्त होते हैं।

प्रश्न- क्या आप किसी वेदमन्त्र का ऋषि अर्थ देकर अन्य सब प्रकार की समस्याओं का साधारण मनुष्यों द्वारा ही नहीं अपितु विद्वानों द्वारा की गई आपत्तियों का निराकरण हो जाता है, यह दर्शा सकते हैं?

उत्तर- क्यों नहीं! एक साधारण मंत्र जो प्रायः सब विद्वानों की जिह्वा पर विद्यमान रहता है, उस पर उठाई गई आपत्तियों का ऋषि अर्थ से समाधान प्रस्तुत करते हैं।

प्रश्न- वह मंत्र कौन सा है?

उत्तर- वह मंत्र 'सपर्य्यगात्'। -यजु. ४०/मन्त्र ८ का है।

आपत्ति- इस मंत्र में 'अकायम्' इस पद से स्थूल-सूक्ष्म कारण शरीरत्रय सम्बन्धरहित सिद्धि होने पर 'अव्रणम्' और 'अस्नाविरम्' इन पदों की व्यर्थता ही है।

समाधान- पाठकगण विचार करें- यह आपत्ति तो वेदों पर ही हो गई। स्वामीजीकृत अर्थ पर नहीं। स्वामी जी अर्थात् ऋषि द्वारा किए गये अर्थ की पुष्टि तो उन्हीं पदों से जिन अर्थों के लिए वे वेद में प्रयुक्त हो रहे हैं, हो जाती है तथा अन्यों ने भी की है।

आपत्ति- इस मन्त्र में 'अकायम्' और 'अव्रणम्' आदि पदों से ईश्वर का लक्षण किया जा रहा है। लक्षण 'दोषमय' अव्याप्ति आदि तीनों दोषों से शून्य होना चाहिए। 'अकायम्' पद तो वायु का भी विशेषण हो सकता है; अतः अतिव्याप्ति दोष कारण के लिए 'अस्नाविरम्' यह पद बन्धनाभाव द्योतक है जबकि वायु नलिकादि में बांध ली जाती है। परमेश्वर अतिसूक्ष्म है, जिसमें वायु का भी प्रवेश नहीं हो सकता है। यह बताने के लिए 'अव्रणम्' पद प्रयुक्त किया गया है। इस प्रकार यह त्रिपद पाठ की सार्थकता बन जावेगी और 'अस्नाविरम्' और 'अव्रणम्' पदों की भी व्यर्थता न रहेगी।

समाधान- यह सर्वथा असम्भव है। क्योंकि 'काय शब्देन चीयन्ते अस्मिन् कर्माणि चीयत्तेऽन्नादिभिर्वा इत्यर्थो-गृह्यते, कायश्च शरीरम्, शरीरंत्रिविधम्-स्थूल-सूक्ष्मकारणात्मकम् तत् त्रिविधमपि शरीरं नास्ति ईश्वरस्येति- 'अकायमिति' पदेन महर्षिणा गृहीतम्।

क्योंकि काय शब्द का अर्थ है जो अन्नादि से पुष्ट होता है अथवा जिसमें कर्मों का चयन हो। और यह काय शरीर है जो तीन प्रकार का है- स्थूल-सूक्ष्म और कारण रूप से। यह 'अकायम्' इस पद का अर्थ महर्षि से गृहीत है कि यह काय=शरीर स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीन प्रकार का होता है- यह ईश्वर का नहीं है।

'अकायम्' यह पद वायु के लिए भी प्रयुक्त हो सकता है तो यह सुनिश्चित है कि कहीं पर भी वायु को काय नहीं कहा गया है- क्योंकि स्थूल पंचभूतों में इसका अन्तर्भाव हो जाता है। और जिसके काय नहीं है- यह व्युत्पत्ति तो पंचभूत निर्मित शरीर व्यतिरिक्त मुक्त जीव में भी घटित हो सकती है। जीव भी कभी मुक्त्य अवस्था में इस व्युत्पतिवाला अर्थ का भागी हो जाता है चाहे मुक्ति की अवस्था से अन्यन्य सकाय होता है। परन्तु वायु का तो अकायत्व ही है अन्यथा मन, बुद्धि चित्त में भी काय पद की घटितता आने लगेगी।

वस्तुतस्तु 'अकायम्' इस पद की अर्थ समावेशता केवल 'स पर्य्यगात्' इस पद में ही सम्भव है। क्योंकि- स अर्थात् जो इस मन्त्र से पूर्व मन्त्रों में सर्वव्यापक्त्वादि विशेषण युक्त ईश्वर है- वह 'पर्य्यगात्' अर्थात् परितः सर्वतोऽगात् गतवान् प्राप्तवानस्ति, नैवेकः परमाणुरपि तद् व्याप्त्याविनास्ति- सब जगत् में परिपूर्ण हो रहा है, एक भी परमाणु उसकी व्याप्ति के बिना नहीं है। दूसरी बात यह है इन्हीं तीनों पदों में ही ईश्वर का लक्षण सीमित नहीं है। इसीलिए अपरिमित प्रज्ञ महर्षि दयानन्द ने इस मंत्र के व्याख्यान में लिखा है कि जो शुक्रादि लक्षणों से युक्त सच्चिदानन्दस्वरूप परमेश्वर है; वह अपने सामर्थ्य से वर्तमान होकर अर्थ अपनी प्रजा के लिए बनाये। अकायम्- आदि विशेषण बिना सपर्य्यगात् तथा 'शुक्रम्' के नहीं घटित हो सकते। क्योंकि 'शुक्रम्' का अर्थ ही सब जगत् का करने वाला और अनन्त वीर्य अर्थात् शक्ति वाला और अनन्त विद्यादिबल वाला है। स्वाभविक है जो अनन्त वीर्य तथा अनन्त विद्या वाला सब जगत् का करने वाला है, वह शरीर अर्थात् सीमित आकार वाला क्योंकर होगा? इसलिए 'अकायम्' इस पद का प्रयोग हुआ है।

और इसके अलावा एक बड़े गम्भीर रहस्य का उद्घाटन कर अन्य आपत्तियों का समाधान भी इन्हीं निषेधात्मक पदों से खोल दिया। इन्हीं निषेधात्मक पदों से अकाय आदि से परमात्मा की विशेषता बताते हुए भी काय के सम्भावित सब विशेषण भी बता दिए। जैसे- जीवकायः व्रण-स्नायु-पापादि युक्तो भवति- अर्थात् जीव का काय व्रण-स्नायु तथा पापादि युक्त होता है।

विशेष- यदि 'अस्नाविरम्' यह पद वायु-वरण के लिए माना जावे तो 'शुद्धम्' इस पद के कहने पर 'अपापविद्धम्' इस पद की व्यर्थता बनी ही रहेगी। और यह कथन वेद मन्तव्य के विपरीत हो जावेगा। और यदि इतना ही हो कि 'अकायत्व' होने पर अस्नाविरत्व और अव्रणत्व-ईश्वरत्व है- यह लक्षण माना जावे तो समस्या यह खड़ी हो जावेगी कि-

शरीर तो भोगायतन अथवा चेष्टा इन्द्रियार्थ का आश्रय है। यह तीन प्रकार का है। वायु भी पंचभूतों का अंग होने से शरीर के ग्रहण से गृहीत हो जाता है। तब इस आपत्ति का क्या बनेगा?

प्रश्न- इस मंत्र में परमेश्वर के लिए प्रयुक्त पद समूह का इस प्रकार से अभिप्राय क्या है?

उत्तर- वास्तव में 'सपर्य्यगात्' इस मंत्र में दो प्रकार का पद समूह है। एक तो सगुण स्तुतिपरक और दूसरा निर्गुण स्तुतिपरक। जैसे-

१. स पर्य्यगात्, शुक्र, शुद्ध, कवि, मनीषी, परिभू, स्वयंभू याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाति- यह सगुण हैं।

२. अकायम्, अव्रणम्, अस्नाविरम्, अपापविद्धम्, यह निर्गुण हैं। अर्थात् सर्वव्यापक, आशुकर, अनन्त बलवान्, शुद्ध, सर्वज्ञ,

सर्वान्तर्यामी, सर्वातिशयी, सनातन, स्वयंसिद्ध परमेश्वर, सनातन, अनादि जीवरूप प्रजा को निजनित्य विद्या से यथावत् अर्थों को वेद मुख से उपदेश करता। इन गुणों से विशिष्ट परमेश्वर के स्तवन से यह सगुण स्तुति है।

३. देहरहित आत्मा, अच्छिद्र, नाड्यादि बन्धन रहित, अपापकारी, क्लेश दुःख अज्ञान से पृथक् परमात्मा उन-उन राग द्वेष गुणों से पृथक् होने से स्तुति विधान निर्गुण स्तुति है।

जब जीवात्मा प्रभु की उपासना से सगुण-निर्गुण स्तुति करता हुआ इन गुण-कर्म-स्वभाव से युक्त हो जाता है, ऐसा भी संविधान इससे ध्वनित होता है। जैसाकि ऋषि ने कहा है- जो-जो गुर्ण कर्म स्वभाव ईश्वर के हैं, वह-वह हमारे भी होवें। जैसे ईश्वर न्यायकारी है तो हम भी न्यायकारी होवें इत्यादि।

सम्मान्य पाठकगण !

इस गम्भीर ज्ञान से उस तपस्वी ऋषि की प्रज्ञा ऋतम्भरा ही थी, यह इस विवेचन से सत्य प्रमाणित हो जाता है। इसीलिए भूमिका के उपासना विषय में कहा भी है कि उस परमेश्वर की दो प्रकार की है। एक सगुण दूसरी निर्गुण जैसाकि 'स पर्य्यगात्' इस मंत्र में।

आपत्ति- जो लोग कहते हैं कि संस्कृत वैयाकरण वेदार्थ कर सकते हैं। व्याकरण जानने वाले एक वैयाकरण का व्याकरण ज्ञान कहता है कि 'अनुदरी कन्या' में जैसे नञ् अल्पार्थक है, उसी प्रकार अकायम् में भी 'अ' को अल्पार्थक मान लिया जावे तो अर्थ होगा अकायम् इस पद से- कि परमात्मा का लघु शरीर है। ऐसा क्यों न मान लिया जावे!

समाधान- यह कथन सर्वथा असंगत है क्योंकि परमेश्वर में तो उदराभाव है और उदराभाव में तो इस 'अनुदरी कन्या' की उक्ति का अभाव ही रहेगा। 'अनुदरी कन्या' के समान ब्रह्म की स्थिति नहीं क्योंकि उसके काय का अभाव होने पर भी ब्रह्म की सत्ता तो प्रसक्त है। 'अरूपवदेव हि तत्प्रधानत्वात्' (वेदान्त ३/२/१४) अर्थात् रूपादि आकार से रहित ब्रह्म का अवधारण करना चाहिए। अस्थूलमनण्व ह्रस्वमदीर्घम् (बृहदारण्यक उप. ३/८/८), अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं (कठोपनिषद् ३/१५), दिव्यो ह्यमूर्त्तः पुरुष स बाह्याभ्यन्तरो ह्यजः (मुण्ड. २/१/२) इत्यादि श्रुतियों में 'न वह स्थूल है, न अणु है, न ह्रस्व है, न दीर्घ है; वह शब्द रहित, स्पर्श रहित, रूप रहित और अव्यय है। वह पुरुष दिव्य, अमूर्त्त और बाहर तथा भीतर और अजन्मा है; निराकार ब्रह्म का अवधारण किया गया है।

आपत्ति- 'समाभ्यः' का अर्थ इस मंत्र में प्रजाभ्यः अर्थात् प्रजाओं के लिए करना- केवल काल्पनिक है।

समाधान- यह आपत्ति तो अनुर्वर मस्तिष्क वाले जनों के लिए तो सुलभ है। रुढ़ि की अर्गला से विचार तन्तुओं के जड़ होने का ही यह परिणाम है। बुद्धिमान् विचार करें कि 'परमात्मा ने पदार्थों का विधान किया' यह अर्थों का विधान जीवों के बिना तर्क संगत नहीं हो सकता। अतः ऋतम्भर-प्रज्ञ महर्षि दयानन्द ने समाभ्यः-प्रजाभ्यः यह अर्थ किया।

नित्य चेतन होने से समान धर्म जीव है। मानार्थक मा धातु से सम्मान्ति इति समाः अथवा सह वर्तते वा मानं ज्ञानं वा आसु ताः समास्ताभ्यः प्रजाभ्यो जीवेभ्यः इति। न च जीवेभ्यः पृथक् क्वापि परमात्मनो वेद-ज्ञानस्याधिकरणता- अर्थात् मानार्थक मा धातु से नित्य चेतन समान धर्म है अथवा चेतन होने से ज्ञान में समानत्व है। ऐसे जीवों के लिए। जीवों से पृथक् परमात्मा के ज्ञान की अधिकरणता भी कहीं नहीं है।

आपत्ति- संवत्सर नामक प्रजापतियों के लिए पदार्थों का विधान किया गया। महीधरकृत यह अर्थ क्यों न मान लिया जावे।

समाधान- महीधर की मानने पर प्रजापति तो अचेतन है अतः उनके लिए अर्थों का विधान घटिक नहीं होता। यदि वे प्रजापति चेतन हैं तो जीवों से अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकते। अतः 'प्रजाभ्यः' यही अर्थ सर्वथा उपयुक्त है, न कि महीधर कृत अर्थ वेद गरिमा विलोपक कदर्थ।

आपत्ति- अकायम्-अव्रणम्-अस्नाविरम् ये पुनरुक्त से प्रतीत होते हैं।

समाधान- इस विषय में निरुक्तकार का कथन है कि ये पुनरुक्त दोष नहीं, प्रत्युत 'अभ्यासे भूयांसमर्थं मन्यन्ते' अभ्यास पठन में अधिक अर्थ के द्योतक होने से सार्थक ही है। अतः कोई दोष नहीं।

आर्ष- प्रातिमचक्षुषा ऋषिणा दृष्टो विशिष्टोऽर्थः, अर्थान् व्यदधात् इत्यस्य प्रतिसर्गं विदधाति इति समुपयुज्यत एवार्थः, स नित्यः सर्वं (वेदोपदेशमपि) कृतवान्, करोति करिष्यति इति वा। आर्ष प्रतिभा सम्पन्न दृष्टि से ऋषि दयानन्द ने और विशिष्ट अर्थ देखा अर्थात् 'व्यदधात्' इसका अर्थ प्रत्येक सर्ग में सृष्टि रचना करता है- यह अर्थ सर्वथा उपयुक्त है- उसने नित्य सर्व वेदोपदेश भी किया था, करता है और करेगा।

इस प्रकार महर्षि के किए वेदभाष्य से ही सबका कल्याण है। मनुष्यों की बुद्धि वेदभाष्य में कृतकारी नहीं होती है। (इसी कारण महीधरादि परमेश्वर के अभिप्राय को ठीक-ठीक व्यक्त नहीं कर पाए)।

- २४३, अरावली अपार्टमेन्ट
अलखनन्दा, दिल्ली- ११००१९
चलभाष- ९८६८५३६७६२

कथा सरित

'जिज्ञासा' मनुष्य योनि को ईश्वर प्रदत्त वह वरदान है जो उसे प्राणी-मात्र से अलग श्रेणी में लाकर खड़ा कर देती है। जिज्ञासा प्रायः हरेक के मन में उठतीं हैं, यह बात पृथक् है कि कौन उनके समाधान में दृढ़ निश्चय पूर्वक जुट जाता है। जो ऐसा कर पाता है वह संसार को अपनी देन के कारण इतिहास के पन्नों पर अपना नाम लिखा जाता है। जेम्सवॉट, आइन्स्टीन, न्यूटन, आर्किमिडीज, जगदीशचन्द्र बोस, डॉ. होमीभाभा आदि ऐसे ही विशिष्ट व्यक्तित्व थे।

बिहार के भागलपुर जिले के नौगछिया क्षेत्र के एक केला-किसान श्री प्रेमरंजन कुमार के पुत्र गोपाल जी भी शायद इसी कतार में खड़े हो गये हैं। भागलपुर के मॉडल हाईस्कूल, तुलसीपुर में १२वीं कक्षा में पढ़ने वाले १७ वर्षीय किशोर गोपाल जी अब तक १० से ज्यादा आविष्कार कर चुके हैं जिनमें से २ का पेटेंट भी करा चुके हैं और बीसियों पुरस्कारों से पुरस्कृत किये जा चुके हैं।

भागलपुर के इस नौगछिया क्षेत्र में केले के पेड़ अधिकाधिक पाए जाते हैं। एक आँकड़े के अनुसार यहाँ ३७००० एकड़ क्षेत्र में केले की खेती होती है। केले की उपयोगिता तो आप जानते ही हैं। फल अर्थात् केला खाइए, इसके पत्ते को सौन्दर्य और प्लेट के रूप में उपयोग कीजिए पर तने का क्या कीजिए? इसका उत्तर अब गोपाल जी के आविष्कार से मिल गया है अर्थात् ग्रीन इनर्जी उत्पादित कीजिए। Banana bio cell जिसके आविष्कार का श्रेय गोपाल जी को जाता है इसकी गिनती उन तीन सर्वश्रेष्ठ आविष्कारों में इटली में गयी जो पर्यावरण को बचाने में कारगर हैं। कुल २२५ रुपये में एक सैल का निर्माण कर २ एलईडी बल्ब को ३-४ घण्टे तक जलाने में सक्षम इस तकनीक ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है।

हमनें लेख के प्रारम्भ में जिज्ञासा की बात कही थी। इस आविष्कार का प्रारम्भ भी जिज्ञासा से हुआ था। केले के पत्ते के तने के निशान कपड़ों पर जब लग जाते हैं तो आसानी से छूटते क्यों नहीं हैं? यह प्रश्न गोपाल जी ने अपने पिता से किया। पिता का उत्तर था कि शायद इसमें कोई प्राकृतिक एसिड होता है। एक संयोग और हुआ। स्कूल की लैब में काम करते हुए भी एक एसिड से गोपाल की कमीज में वैसा ही दाग लग गया जिसने यह सिद्ध कर दिया कि केले के तने में एसिड होता है। बस अब गोपाल इसमें जुट गया। दो वर्ष तक लगा रहा और तब केले के तने में पाए जाने वाले Citric acid को दो Electrodes से जोड़ कर विद्युत् बनाने में सफल हुआ। इनमें से एक electrode जिंक का था तो दूसरा कॉपर का। इलेक्ट्रोडों को बिजली के तार की सहायता से केले के दो तनों से (एक-एक फिट के) जोड़ दिया। गोपाल का कहना है कि केले के तने की bio energy, electric में इस प्रकार बदल जाती है। नौगछिया गाँव, जहाँ दिन में २-३ घण्टे बिजली आती थी आज २४ घण्टे बिजली उपलब्ध है।

गोपाल जी को यदि जीनियस कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी। अभी वे देहरादून की 'ग्राफिक एरा यूनिवर्सिटी' की लेब में कार्य कर रहे हैं जिसमें केले के तने से सेनीटरी पैड तथा डायपर बनाना प्रमुख है। जिन आविष्कारों पर वे काम कर रहे हैं उनमें से प्रमुख हैं -

Goponium Alloy, Banana Nano Cell, Banana Nano Fiber, Gopal Alaska, Solar Mile etc.

गोपाल जी को नासा, जैन इर्रिगेशन, आई स्मार्ट ,आई बी एम, स्टेन फोर्ड, ऑक्स फोर्ड से आफर्स आ चुके हैं, नासा ने तो सूर्य पर अध्ययन के लिए बुलाया है। उन्हें अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया है जिनमें से कुछ हैं -

Inspired Award 2016, National Innovation Award, Global leader Award, Youngest Scientist of India Award and others.

गोपाल जी Hunting for Hundred के माध्यम से १०० ऐसे Innovation Skill वाले विद्यार्थिओं को प्लेटफार्म तथा सहायता प्रदान करना चाहते हैं जिससे भारत वैज्ञानिक उन्नति के नए आयामों को स्पर्श करे।

- नवनीत आर्य

स्वास्थ्य क्या है?

अधिकांश लोगों की नजरों में किसी बीमारी का न होना स्वास्थ्य है पर यह स्वास्थ्य की सही परिभाषा नहीं है। विद्वानों के अनुसार शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टि से सही और संतुलित होने का नाम स्वास्थ्य है, ना कि बीमारी के न होने का। वास्तव में स्वास्थ्य शब्द पूरी तरह से भावनात्मक और शारीरिक उच्चता की स्थिति को दर्शाता है। अच्छा स्वास्थ्य जीवन में आने वाले तनाव को सम्भालने के साथ लम्बे और सक्रिय जीवन जीने की कुंजी है।

अच्छे स्वास्थ्य के कारकों में आनुवंशिकी, पर्यावरण, रिश्ते और शिक्षा शामिल हैं। संतुलित भोजन व्यायाम और आचार-विचार की शुद्धता किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य को उन्नत कर सकते हैं। हमें सम्पूर्ण स्वास्थ्य के बारे में जानकारी अवश्य होनी चाहिए।

स्वास्थ्य के प्रकार-

मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य, स्वास्थ्य के दो सबसे चर्चित प्रकार हैं। यहाँ हम इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य के अन्य प्रकारों की भी चर्चा करेंगे जिनमें आध्यात्मिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक स्वास्थ्य शामिल हैं।

१. शारीरिक स्वास्थ्य- एक व्यक्ति जो शारीरिक स्वास्थ्य का अनुभव करता है, उसके जीवन में नियमित व्यायाम, संतुलित पोषण और पर्याप्त आराम करने के बीच संतुलन होता है। शारीरिक स्वास्थ्य में व्यक्ति के सभी अंगों का सामान्य रूप से काम करना शामिल है जैसे देखना, सुनना, चलना आदि। शारीरिक रूप से स्वास्थ्य किसी व्यक्ति की सांस लेने और हृदय की कार्यक्षमता, मांसपेशियों की शक्ति, लचीलापन और शरीर की संरचना स्वास्थ्य के बनाये गये मानदण्डों के अनुरूप होती है। वह अपनी उम्र के अनुसार पर्याप्त नींद ले पाता है और सुबह उठने पर स्फूर्ति और ताजगी से भरा होता है।

२. मानसिक स्वास्थ्य- शारीरिक स्वास्थ्य की तुलना में मानसिक स्वास्थ्य को जाँचना कठिन है। शारीरिक स्वास्थ्य केवल अवसाद, चिन्ता या किसी अन्य विकार की अनुपस्थिति नहीं है। शारीरिक स्वास्थ्य एक व्यक्ति के भावनात्मक और सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है। हम कैसे सोचते हैं, महसूस करते हैं और कार्य करते हैं, इससे मानसिक स्वास्थ्य रेखांकित होता है। भूतकाल में जीवन में घटी किसी अप्रिय घटना से भी मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित रह सकता है।

मानसिक स्वास्थ्य एक सम्पूर्ण एवं सक्रिय जीवनशैली के लिए शारीरिक स्वास्थ्य जितना ही महत्वपूर्ण है। व्यक्ति का दूसरों से व्यवहार कैसा होगा? और उसकी सोच के साथ तनाव को संभालने की क्षमता कैसी होगी? यह सब उसके मानसिक स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। मानसिक स्वास्थ्य को सही रखने के लिए दूसरों में रुचि लेना, व्यवहार में प्रसन्नता और शान्ति का भाव रखना जरूरी है।

अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के लिए जीवन का आनन्द लें। कठिन और बुरे अनुभवों के बाद वापस और भी अच्छी स्थिति में अपने आपको लाकर दिखायें। भूतकाल की घटनाओं का असर वर्तमान जीवन में न आने दें। जीवन में संतुलन हासिल करते हुए अपनी क्षमता को प्राप्त करें।

मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों में शामिल है-

शारीरिक समस्या- शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य जुड़े हुए है। यदि पुरानी बीमारी से किसी व्यक्ति की अपने नियमित कार्यों को पूरा करने की क्षमता प्रभावित होती है तो इससे अवसाद और तनाव हो सकता है। लम्बी बीमारी से व्यक्ति में चिड़चिड़ापन आ सकता है।

आर्थिक कारण- पैसों की कमी के कारण अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा न कर पाना मानसिक तनाव का सबसे बड़ा कारण है। धन की समस्याओं के कारण जो कभी कठिनाईयाँ बढ़ जाती हैं जिसका असर मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है।

आनुवांशिकी- हर व्यक्ति जीन की एक श्रेणी के साथ पैदा होता है, और कुछ लोगों में, एक असामान्य आनुवंशिक पैटर्न उनके मानसिक स्वास्थ्य के स्तर को गिरा सकता है। इस पर देश काल और वातावरण का प्रभाव भी होता है।

शिक्षा का स्तर- शिक्षा का स्तर व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। शिक्षित व्यक्ति का नजरिया किसी तनाव की स्थिति में बेहतर होता है क्योंकि वह समस्या के बहुत से समाधान निकालने में सक्षम होता है।

साभार- अन्तर्जाल

समाचार

चन्द्रमोहन कुशवाह विधि सलाहकार

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने श्री चन्द्रमोहन कुशवाह, एडवोकेट को प्रान्तीय विधि सलाहकार के रूप में मनोनीत किया है। आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के मंत्री श्री देवेन्द्र शास्त्री ने बताया कि श्री कुशवाह २०२०-२१ में सभा के सभी विधिक मामलों को देखेंगे।

वेद मंत्र प्रतियोगिता का आयोजन

'सुरेश चन्द्र गुप्ता, चेरिटेबल ट्रस्ट' एवं आर्य समाज, हिरणमगरी, सेक्टर ४, उदयपुर के तत्वावधान में उक्त प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस अवसर पर निर्णायक श्री अशोक आर्य ने वर्तमान संदर्भों में वैदिक ज्ञान की उपादेयता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि ईश्वर की अमृतमयी वाणी वेद मनुष्य मात्र के लिए है। वेद मनुष्य के लिए इस संसार में व्यवहार करने की नियमावली है।

प्रतियोगिता दो स्तर पर आयोजित की गई। कनिष्ठ वर्ग में डीपीएस विद्यालय की सुश्री अन्वेषा नन्दी ने प्रथम, दयानन्द कन्या विद्यालय की सुश्री कंचन वैष्णव और नीमा गमेती ने द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। कनिष्ठ वर्ग में टीम ट्राफी दयानन्द कन्या विद्यालय को मिली। इसी प्रकार वरिष्ठ वर्ग में सेन्ट एन्थॉनी विद्यालय की यशा जैन प्रथम व तन्वी जैन द्वितीय एवं मिरिण्डा सीनियर स्कूल की भूमिका मेनारिया तृतीय स्थान पर रहीं। वरिष्ठ वर्ग में टीम ट्रॉफी सेन्ट एन्थोनी विद्यालय को दी गई। कनिष्ठ वर्ग में ३६ एवं वरिष्ठ वर्ग में ११ विद्यार्थियों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता में उदयपुर के २५ विद्यालयों ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने की। निर्णायक मण्डल में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य, संस्कृतज्ञ आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री एवं प्रोफेसर बी.एल.जैन ने अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती ललिता मेहरा ने किया। पुरस्कारों का वितरण सुरेश चन्द्र गुप्ता चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से श्रीमती शारदा गुप्ता और दयानन्द कन्या विद्यालय, उदयपुर की मानक निदेशक पुष्पा जी सिन्धी ने किया।

पुस्तक विमोचन

प्रसिद्ध भाषाविद् साहित्यकार, पर्यटक तथा समाजसेवी डॉ. पूर्णसिंह डबास की नवप्रकाशित पुस्तक 'सिन्धु से हिन्दू और इंडिया' का लोकार्पण केन्द्रीय रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री राजनाथ सिंह ने पुस्तक में विवेचित विषय की गंभीरता व इसके विश्लेषण की आवश्यकता का अनुभव करते हुए डॉ. डबास को बधाई दी कि ऐसा शोधपूर्ण ग्रन्थ लिखकर उन्होंने मानवता को एक श्रेष्ठ देन प्रदान की है। इस अवसर पर पूर्व केन्द्रीय मंत्री और योजना आयोग के सदस्य रहे श्री सोमपाल शास्त्री ने कहा कि प्रस्तुत विषय का इतना गम्भीर और विशद् विवेचन करने वाली हिन्दी भाषा की यह पहली पुस्तक है। - डॉ. डबास

सफलता पूर्वक सम्पन्न महाशिवरात्रि पर्व

बसन्त पंचमी पर्व आयोजित

आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के तत्वावधान में बसन्त पंचमी पर्व मनाया गया। जिसमें यज्ञोपरान्त कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ कवि रामदयाल मेहरा, कमल सुहालका, जिग्नेश शर्मा ने काव्यपाठ किया। डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने देशभक्ति की रचना 'मेरे शहर में शहादत के शहर हैं' सुनाते हुए शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। आर्य समाज की उप प्रधान श्रीमती ललिता मेहरा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

लाला लालपत राय जयन्ती मनाई गई

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा के तत्वावधान में लाला लाजपत राय सर्किल शॉपिंग सेन्टर पर प्रसिद्ध स्वतंत्रता सैनानी लाला लाजपत राय की जयन्ती मनाई गई। इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता श्री अर्जुन देव चड्ढ़ा ने की। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि पूर्व महापौर सुमन शृंगी थीं। उन्होंने लाला लाजपत राय जी के जीवन पर सार्थक उद्बोधन प्रदान किया। - अर्जुन देव चड्ढ़ा

रोग निदान शिविर का रजत जयन्ती समारोह

आर्य कन्या विद्यालय समिति एवं श्री रामजी लाल आर्य कन्या छात्रावास समिति, अलवर की ओर से गत पच्चीस वर्षों से अलवर में निःशुल्क रोग निदान शिविर लगाए जाते रहे हैं। ६ फरवरी २०२० को इस उपक्रम के रजत जयन्ती वर्ष में स्थानीय हरीश हॉस्पीटल के सौजन्य से वैदिक विद्या मंदिर में यह निःशुल्क रोग निदान शिविर लगाया गया। - प्रदीप कुमार आर्य, मंत्री

गंगासागर मेला सेवा शिविर

आर्य समाज, हावड़ा एवं आर्य महिला समाज, हावड़ा के तत्वावधान में दिनांक १२ से १५ जनवरी २०२० तक प्रसिद्ध गंगासागर मेले के अवसर पर गत २६ वर्षों की भाँति तीर्थ यात्रियों की सेवा के लिए मेला प्रांगण में शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें तीर्थ यात्रियों के लिए जहाँ आवास एवं भोजनादि की निःशुल्क व्यवस्था की गई वहीं संध्या, हवन, भजनोपदेश और उपदेशों का क्रम निरन्तर रहा। इस अवसर पर निःशुल्क वैदिक साहित्य का वितरण भी किया गया। - डॉ. देवेन्द्र उपाध्याय, मंत्री

हलचल

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, नरवाना के तत्वावधान में दिनांक १८ से २१ फरवरी २०२० तक उक्त उत्सव समारोहपूर्वक आयोजित किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान् आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने महर्षि दयानन्द के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर विशद् प्रकाश डालते हुए मंत्रमुग्ध श्रोताओं को ऋषि पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान की। इस अवसर पर पंडित भानुप्रकाश शास्त्री, बरेली ने भी अपने भजनोपदेशों से श्रोताओं को लाभान्वित किया।

श्री गजानन्द आर्य स्मृति व्याख्यान माला

आर्य जगत् के भामाशाह तथा श्रीमती परोपकारिणी सभा के पूर्व प्रधान (स्मृतिशेष) श्री गजानन्द आर्य की स्मृति में प्रतिवर्ष व्याख्यानमाला के आयोजन का निश्चय आर्य जी के परिवार द्वारा किया गया है। जिसकी प्रथम कड़ी में २२ फरवरी २०२० को 'इस्कॉन ऑडिटोरियम, जुहू, मुम्बई में कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें श्री गजानन्द जी आर्य के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर गणमान्य व्यक्तियों द्वारा उद्बोधन के साथ-साथ 'शांति-क्रान्ति एवं भ्रांति' विषय पर आचार्य वागीश जी द्वारा सारगर्भित उद्बोधन प्रदान किया गया।

यह व्याख्यानमाला श्री सत्यानन्द जी आर्य (दिल्ली) की प्रेरणा के फलस्वरूप आयोजित की गई। - महेन्द्र आर्य, मुम्बई

दयानन्द जयन्ती के अवसर पर भव्य रैली का आयोजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती के १९६वें जन्मदिवस के अवसर पर आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के तत्वावधान में एक विशाल रैली का आयोजन किया गया। इस रैली में दयानन्द कन्या विद्यालय, विद्या विहार विद्यालय, वात्सल्य अकादमी,

सेंट्रल अकादमी सीनियर सेकेंड्री स्कूल सेक्टर-५, विद्यानिकेतन कन्या विद्यालय, विद्यानिकेतन बालक विद्यालय के ५०० बालक-बालिकाओं के अतिरिक्त आर्य समाज हिरणमगरी, आर्य समाज पिछोली, आर्य समाज सज्जन नगर, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास आदि के लगभग १०० महिलाओं व पुरुषों ने भाग लिया। हिरण मगरी, सेक्टर-४ की पार्षद श्रीमती विद्या भावसार ने रैली को आर्य समाज से ६.०० बजे प्रातः झण्डी दिखाकर रवाना किया एवं पूरे मार्ग में साथ चलकर ११.०० बजे समापन किया। छात्र-छात्राओं ने राष्ट्रभक्ति, समाज सुधार, दलितोद्धार, पाखण्ड खंडन, बालिका शिक्षा, नशा उन्मूलन, नारि सशक्तिकरण, वेद प्रचार, स्वदेशी, स्वभाषा एवं स्वसंस्कृति आदि की तख्तियाँ हाथ में ली हुई थी। हाथ-ठेले पर दयानन्द कन्या विद्यालय की बालिकाएँ यज्ञ करती हुई वेदमंत्र बोल रही थीं। मार्ग के चौराहों पर रैली रोक कर श्री सत्यप्रिय शास्त्री ने महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा किये गए समाज सुधार, धार्मिक कुरीतियों का खंडन, सत्य सनातन वैदिक धर्म का पुनरोद्धार एवं स्वराज्य के प्रथम उद्घोष पर संक्षिप्त परिचय दिया। - ललिता मेहरा

महाशोक- आर्य जगत् निःशब्द

आर्य जगत् के नारद व हनुमान नाम से पहचाने जाने वाले विख्यात् अनेक ग्रन्थों के लेखक, संपादक व प्रकाशक आर्य जगत् के लिए जीवन समर्पित करने वाले आचार्य ब्रह्मचारी नंदकिशोर जी का दिनांक १७ फरवरी २०२० को सायंकाल होशंगाबाद के केशव हॉस्पीटल में चिकित्सा के दौरान स्वर्गवास हो गया। आर्य जगत् निःशब्द स्तब्ध है। आर्यसमाज की अमूल्य निधि, चलता-फिरता आर्य समाज। आर्य समाज को समर्पित व्यक्तित्व आज नियति की गोद में चिरनिद्रा में सो गया। ईश्वर दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि। - अशोक आर्य

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०१/२० के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०१/२० के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.),श्री जीवन लाल आर्य; दिल्ली, श्री उमाशंकर शास्त्री; तेघरा (बिहार), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्रीमती परमजीत कौर; नई दिल्ली, श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री गोवर्धन लाल झँवर; सिहोर (म.प्र.), श्री इद्रजीत् देव; यमुनानगर (हरि.), श्री रमेश चन्द्र प्रियदर्शन; सीतामढ़ी (बिहार), श्री किशनाराम आर्य; नागौर (राज.), श्री गणेश दत्त गोयल; बुलन्दशहर (उ.प्र.), श्री फूलसिंह यादव; मुरादनगर (उ.प्र.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), डॉ. राजबाला आर्या; करनाल (हरि.), श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरि.), श्री श्याम मोहन गुप्ता; विजयनगर (म.प्र.), श्री अन्नत लाल उज्जैनिया; भोपाल (म.प्र.), प्रधान आर्य समाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी; बीकानेर (राज.), श्रीमती सुनीता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती कंचन सोनी; बीकानेर (राज.), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; दिल्ली, श्री सोमपाल सिंह यादव; रामपुर (उ.प्र.), श्री हीरा लाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री हरि नारायण; देवास (म.प्र.), श्री शृयांश गुप्ता; मनिया (राज.), श्री रामदत्त आर्य; मनिया (राज.), श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर (म.प्र.), श्री राम प्रसाद श्रीवास्तव; लखनऊ (उ.प्र.)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ १० पर अवश्य पढ़ें।

तर्क की कसौटी पर अवतारवाद

अवतारवादियों का मानना है कि विशिष्ट हेतुओं से ईश्वर अवतार (शरीर) धारण करते हैं जिनमें दुष्टों का नाश तथा साधुओं का परित्राण मुख्य है। यहाँ स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि-

मध्य प्रदेश के दतिया जिले के एक मन्दिर के दो पुजारी राजू पण्डित तथा बटोली प्रजापति ने एक पाँच वर्षीय मासूम बालिका के साथ बलात्कार किया तो प्रश्न उठता है कि जब एक हाथी की रक्षा के लिए प्रभु नंगे पैर दौड़ पड़े थे तो अब मंदिर में (उनके तथाकथित घर में) उन्हीं के तथाकथित भक्त (पुजारी) द्वारा अल्पवयस पुत्री समान मासूम से जघन्य कृत्य किया गया, तब भगवान का दिल क्यों नहीं पसीजा?

अवतारवादियों में यह मान्यता प्रसिद्ध है कि दुष्टों यथा कंस, रावणादि का संहार करने हेतु अवतार होता है। परन्तु अवतारवाद के जनक ग्रन्थों में एक ही अवतार के भिन्न-भिन्न कारण देखने को मिलते हैं। यहाँ हम संकेत स्वरूप रामावतार के कारणों का उल्लेख कर रहे हैं-

(क) स्वायंभुव मनु-शतरूपा की तपस्या के फलस्वरूप विष्णु द्वारा तीन जन्मों में उनके पुत्र रूप में जन्म लेने का वचन। तदनुरूप क्रमशः राम और कृष्ण का अवतार हो चुका है। कलियुग में संभल में लिया जाना बताया है, जो शेष है।

(ख) विष्णु द्वारा भृगुपत्नी की हत्या के फलस्वरूप भृगु ने विष्णु को शाप दिया कि वह भी मनुष्य रूप में जन्म ले, पत्नी वियोग से संतप्त होगा। फलतः रामावतार हुआ।

अवतार प्रकरण-ईश्वर जन्म नहीं लेता

न यं जरन्ति शरदो न मासा न द्याव इन्द्रमवकर्शयन्ति।
वृद्धस्य चिद्वर्धतामस्य तनूः स्तोमेभिरुक्थैश्च शस्यमाना॥

- ऋग्वेद ६/२४/७

जो निर्विकार और जन्म मरण तथा बुढ़ापे आदि दोषों से रहित परमात्मा की उपासना करते हैं, वे प्रशंसा योग्य होते हैं।

(ग) विष्णु ने सनत्कुमार को शाप दिया। बदले में सनत्कुमार ने विष्णु को अज्ञानी (मनुष्य) हो जाने का शाप दिया।

(घ) विष्णु ने नृसिंह रूप धर देव शर्मा की पत्नी को डराया जिससे वह मर गयी। क्रोधित देव शर्मा ने विष्णु को पत्नी वियोग भोगने का शाप दिया था। यह रामावतार की पृष्ठभूमि थी।

(ड.) विष्णु ने छल से वृन्दा के सतीत्व को नष्ट किया। वृन्दा ने शाप दिया कि विष्णु मनुष्य बनेगा तथा इस कुकृत्य में विष्णु की सहायता करने वाले जय-विजय राक्षस बन उसकी पत्नी का हरण करेंगे। यहाँ राम, रावणादि के अवतरण का कारण वृन्दा शाप बताया है।

(च) नारद ने विष्णु को शाप दिया कि तुम मनुष्य बनकर वानरों के साथ विरह का दुःख भोगो। (नारद मोह कथा)

पाठकगण! अब स्वयं विचार कर सकते हैं कि क्या वास्तव में ईश्वर ने स्वेच्छा से दुष्टों के संहार हेतु अवतार लिये थे अथवा उपरोक्त कारणों से विष्णु को मजबूरन लेने पड़े। और यह भी कि उपरोक्त में से कौनसा कारण सही है?

जिस काल में ये अवतार हुए तत्समय में कोई नहीं जानता था कि ये अवतार हैं। संकेत हेतु कुछ उदाहरण-

(क) सुग्रीव राम से उनकी वीरता का प्रमाण माँगते हैं। अर्थात् वे नहीं जानते थे कि राम ईश्वरावतार हैं।

(ख) बाली राम को उनके कृत्य पर धिक्कारता है। क्योंकि वह भी नहीं जानता था कि राम अवतार हैं।

(ग) सीता तक को भी राम की सफलता पर संदेह था। अवतार जानतीं तो संदेह क्योंकर होता?

(घ) जरासन्ध के आक्रमण के समय, सुभद्रा विवाह पर, महाभारत युद्ध में कौरव पाण्डव में से यादव किसके पक्ष में हों, इस प्रश्न पर बन्धु बान्धवों द्वारा तथा जरासन्ध, रुक्मी, शिशुपाल आदि द्वारा श्री कृष्ण का घोर विरोध परिचायक है कि वे लोग कृष्ण को साधारण मानव ही मानते थे।

(ड़) दुर्योधन भी नहीं जानता था कि श्रीकृष्ण ईश्वर के अवतार हैं अन्यथा वह युद्ध में कृष्ण की सेना के स्थान पर स्वयं कृष्ण की सहायता वरण करता।

यह भी विचारणीय है कि इन महापुरुषों ने स्वयं को कभी ईश्वर नहीं कहा, वरन् अनेक स्थानों पर स्वयं को मनुष्य ही कहा है। अनेक उदाहरण हैं पर स्थानाभाव से नहीं दे रहे।

अतएव प्रमाणित है कि इनके अवतार होने की परिकल्पना बाद में की गई है।

ये महापुरुष भी संध्यादि नित्यकर्मों द्वारा ईश्वरोपासना करते थे। अगर ये स्वयं ईश्वर होते तो ऐसा क्यों करते?

हमने स्थानाभाव के कारण कुछ संकेत मात्र किए हैं। सुधी पाठक स्वयं निष्कर्ष निकाल सत्य का आश्रय ले सकते हैं। वस्तुस्थिति यही है कि ईश्वर अवतार लेता है यह धारणा, अवैदिक, युक्ति शून्य, असंभव व ईश्वर के महत्व को कम करने वाली है। इस धारणा के मनगढ़न्त होने का सबसे बड़ा प्रमाण है कि जिसके मन में जो आया उसने वैसा ही लिख मारा इसी कारण एक ही अवतार के होने के कई कई कारण पाये जाते हैं।

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग

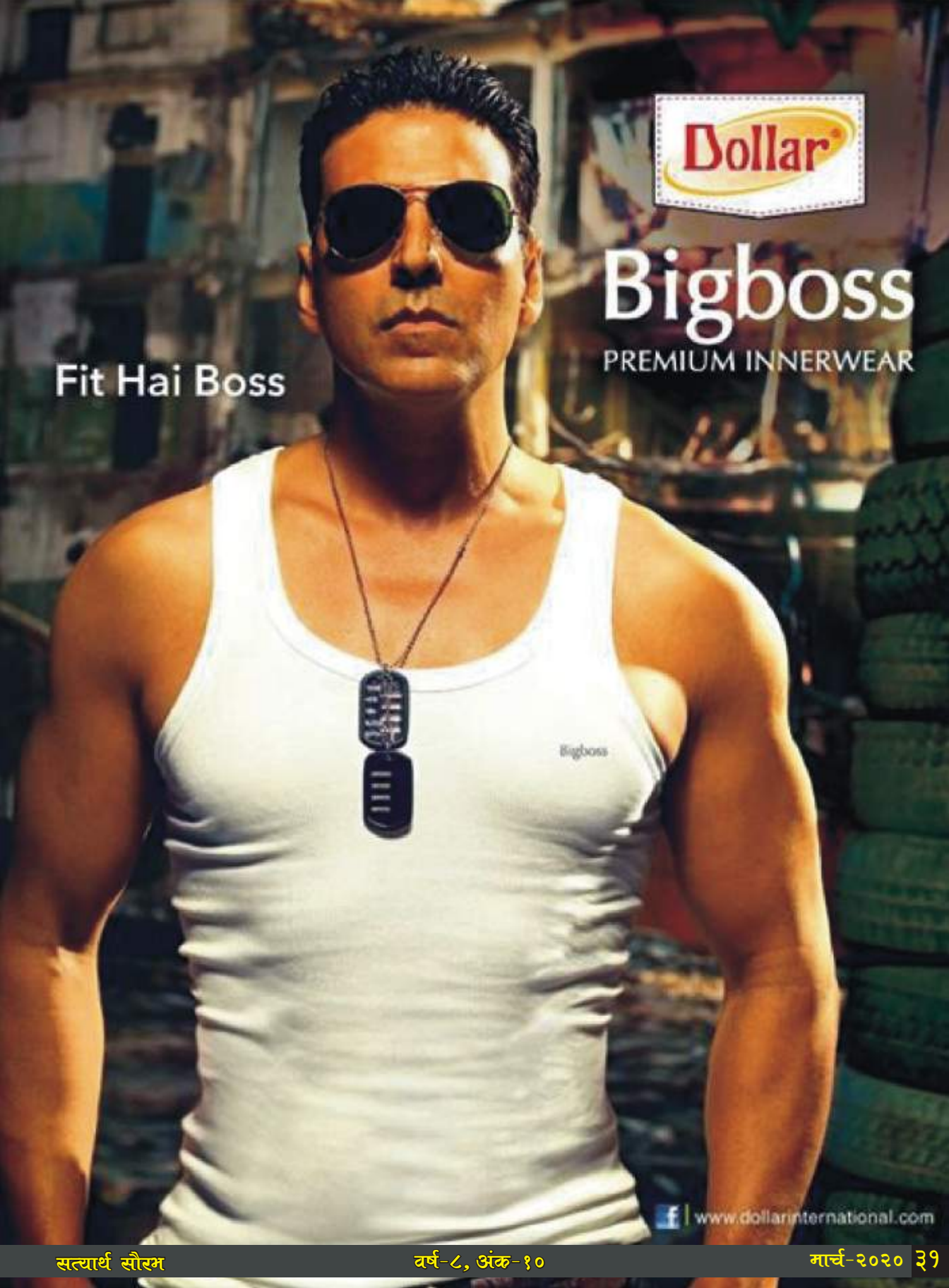
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 March-2020 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

जो तुम कहते हो कि मूर्त्ति के देखने से परमेश्वर का स्मरण होता है, यह तुम्हारा कथन सर्वथा मिथ्या है, और जब वह मूर्त्ति सामने न होगी तो परमेश्वर के स्मरण न होने से मनुष्य एकान्त पाकर चोरी, जारी आदि कुकर्म करने में प्रवृत्त भी हो सकता है, क्योंकि वह जानता है कि इस समय यहाँ मुझे कोई नहीं देखता, इसलिये वह अनर्थ करे बिना नहीं चूकता। - सत्यार्थप्रकाश, एकादश समुल्लास पृष्ठ ३०६

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर